



मॉयल भारती

अंक 12 : अक्टूबर 2024 से मार्च 2025



अनुक्रमाणिका

क्र.	विषय	पेज क्र.
01	अनुक्रमाणिका	01
02	अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक जी का संदेश	02
03	निदेशक वित्त जी का संदेश	03
04	निदेशक (मा. स.) जी का संदेश	04
05	निदेशक (उ. एवं यो.) जी का संदेश	05
06	निदेशक (वाणिज्य) जी का संदेश	06
07	मुख्य सतर्कता अधिकारी जी का संदेश	07
08	संपादकीय मंडल एवं संपादकीय	08
09	राष्ट्रपति आदेश	09
10	संवैधानिक प्रावधान	10-12
11	अंग्रेजी हिंदी शब्द	13-14
12	शुद्ध एवं अशुद्ध शब्द	15
13	दैनिक प्रयोग में लाये जाने वाले शब्द	16-18
14	मानक वर्तनी (लिपि) : कठिनाइयाँ और समाधान	19-21
15	टिप्पणियाँ	22-23
16	हिंदी पखवाड़ा के कार्यक्रम	24-25
17	खान स्तर पर हिंदी कार्यक्रम	26-28
18	तिमाही कार्यशाला का आयोजन	29
19	हिंदी मासिक प्रतियोगिता	30
20	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिती कार्यक्रम	31
21	पूजा का सही तरीका - राजेश श्रीवास्तव	32-33
22	प्रशासनिक भाषा व प्रशासन के क्षेत्र में हिंदी भाषा का प्रयोग - अनिल घरडे	34-35
23	अंतर्राष्ट्रीय क्वालिटी सर्कल सम्मेलन कोलंबो श्रीलंका में मॉयल लिमिटेड का उत्कृष्ट प्रदर्शन।	36
24	मॉयल की फेरो प्लांट, बालाघाट खान को मिला प्रथम स्थान !!!	37
25	खेल का महत्व - संदीप देवांगन	38
26	सुकून की छांव - मो. अफरोज अख्तर	39
27	सब्र का फल मीठा - सुखराम ब्रम्हे	40
28	सफलता की कुंजी - नीता गुजर	41
29	निराशा : एक स्वाभाविक अनुभव - सोनु वासनिक	42
30	मोहल्ले का नायक - विजय कांबले	43
31	जीवन का सफर - अनिल घरडे	44
32	माँ का आँचल - अनिल घरडे	44
33	वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा में हिन्दी भाषा का स्वरूप - निजहत खान	45-46
34	पर्यावरण प्रदूषण - संदीप द्विवेदी	47
35	हिन्दी राजभाषा - साक्षी राजकुमार मेश्राम	48
36	हिन्दी हमारी राजभाषा - मनोज रामटेके/रीता ठाकरे	49
37	आमंत्रण - दिनेश कनोजे देहाती	50
38	जीवन में स्वच्छता की भागीदारी तथा हिन्दी भाषा का महत्व - नवीन घटारे	51
39	जीवन की राम कहानी - नितीन रोकडे	52-53
40	सफलता का मार्ग - जाहीद खान	54-55
41	साइबर सुरक्षा इसे आदत बनाए! - संकटराम ब्रम्हवंशी	56-57
42	यादगार पल	58
43	मॉयल - समाचार पत्र की कुछ झलकियाँ	59-60



मॉयल लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

मॉयल भवन, 1-ए, काटोल रोड,
नागपुर- 440013

अजित कुमार सक्सेना

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक



संदेश

प्रिय साथियों,

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं !!

मॉयल लिमिटेड, राजभाषा विभाग की गृह-पत्रिका मॉयल भारती, राजभाषा के सफल कार्यान्वयन हेतु एक सराहनीय कदम है।

भारत के संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है। अतः राजभाषा हिंदी के प्रयोग में प्रगति करना भारत के नागरिकों का संवैधानिक कर्तव्य है। इस दिशा में मॉयल भारती की भूमिका प्रशंसनीय है क्योंकि राजभाषा प्रचार-प्रसार का जो लक्ष्य रखा गया है उसे पूरा करने में राजभाषा पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

इस पत्रिका में छपे लेख एवं कविताएँ मॉयल लिमिटेड के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को उजागर करते हैं। इसके साथ ही ये रचनाएँ राजभाषा के प्रति लगाव व सम्मान भी दिखलाती हैं। पत्रिका के द्वारा मॉयल लिमिटेड से जुड़े लोगों को अपनी बात कहने का सरल अवसर प्राप्त होता है और वे अपनी बात सुगमता से सबके सामने रख पाते हैं। 'मॉयल भारती' मॉयल लिमिटेड की तकनीकी, सांस्कृतिक एवं अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धियों का भी सजीव दर्पण है जिसके माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी आसानी से प्राप्त होती है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं संपादक मंडल को बधाई देता हूँ और सभी रचनाकारों को शुभकामनाएं देता हूँ।

अजित कुमार सक्सेना
अजित कुमार सक्सेना



मॉयल लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

मॉयल भवन, 1-ए, काटोल रोड,
नागपुर- 440013

राकेश तुमाने निदेशक (वित्त)



प्रिय साथियों,

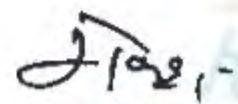
आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं!!

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि मॉयल लिमिटेड द्वारा मॉयल भारती पत्रिका का 12वां अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

आज विचारों एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति तथा ज्ञान-प्रसार के साधन के रूप में भाषा का एकाधिकार है। भाषा का प्रयोग ही भाषा को सशक्त और समृद्ध बनाता है। भाषा के प्रयोग का अर्थ है उस भाषा में बोलना व लिखना हिंदी भारत में अधिकाधिक लोगों द्वारा बोले जाने वाली भाषा तो है ही, साथ ही साथ यह हमारी राजभाषा सरकार के कामकाज की भाषा भी है। जहां तक हिंदी भाषा के प्रयोग का प्रश्न है तो इस संबंध में भी वही बात लागू होती है जो अन्य किसी भाषा के लिए लागू होती अर्थात् जितना अधिक हम हिंदी में बोलेंगे, लिखेंगे और पठन-पाठन करेंगे उतनी ही अधिक हिंदी सशक्त व समृद्ध होगी।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए सतत् प्रयत्न करना हमारा संवैधानिक दायित्व है। पत्रिका प्रकाशन से हिंदी में विचारों को रखे जाने, हिंदी भाषा में सोचने और काम करने की प्रवृत्ति को बल मिलता है। आज के इस तकनीकी युग में समय के साथ चलते हुए मॉयल लिमिटेड द्वारा मॉयल भारती का प्रकाशन एक सराहनीय कदम है।

मॉयल भारती के 12वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं और इसके संपादन से जुड़े सभी सुधीजनों को हार्दिक बधाई।


राकेश तुमाने



मॉयल लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

मॉयल भवन, 1-ए, काटोल रोड,
नागपुर- 440013

उषा सिंह
निदेशक (मा.सं.)



संदेश

प्रिय हिन्दी प्रेमियों !!

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं। यह प्रसन्नता का विषय है कि राजभाषा के प्रचार प्रसार को समर्पित हिन्दी पत्रिका 'मॉयल भारती' का एक और अंक प्रकाशित होने जा रहा है।

आप सभी के समक्ष मॉयल लिमिटेड की हिन्दी पत्रिका 'मॉयल भारती' के 12वें अंक को प्रस्तुत करते हुए अत्यन्त आनंद की अनुभूति हो रही है। हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो हमें एक-दूसरे से जोड़ती है। मेरा मानना है कि हिन्दी के प्रचार-प्रसार को उत्तरोत्तर बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि हम हिन्दी को अपनी मूल चिंतन प्रक्रिया का माध्यम बनाएं एवं वार्तालाप और संवाद के साथ-साथ लेखन कार्य में भी अधिकाधिक हिन्दी का प्रयोग करें।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका अपनी गुणवत्ता में राजभाषा एवं अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियों को दर्शाने का सुंदर माध्यम सिद्ध होगी।

'मॉयल भारती' के प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

उषा सिंह

उषा सिंह



मॉयल लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

मॉयल भवन, 1-ए, काटोल रोड,
नागपुर- 440013

एम एम अब्दुल्ला
निदेशक (उ. एवं यो.)



संदेश

प्रिय साथियों,

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं!!

अत्यंत हर्ष का विषय है कि मॉयल लिमिटेड द्वारा राजभाषा हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए राजभाषा पत्रिका मॉयल भारती के 12 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इससे हिन्दी के प्रचार प्रसार हेतु उपयुक्त वातावरण का सृजन तो होगा साथ ही राजभाषा हिन्दी को व्यवहार में लाने के संवैधानिक दायित्व की पूर्ति में भी यह पत्रिका उपयोगी एवं प्रेरक सिद्ध होगी।

देश के विशाल क्षेत्र में फैली हिन्दी जन जन के संवाद की भाषा बन चुकी है व हमारी सामाजिक संस्कृति व परंपरा को भी सुदृढ़ करती है। वर्तमान परिवेश में हिन्दी तकनीकी एवं ज्ञान विकास के क्षेत्र में निरंतर विकसित हो रही है व विश्व स्तर पर भी हिन्दी की स्वीकार्यता बढ़ रही है।

मैं मॉयल भारती के उज्ज्वल भविष्य एवं सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

इ. अब्दुल्ला

एम एम अब्दुल्ला



मॉयल लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

मॉयल भवन, 1-ए, काटोल रोड,
नागपुर- 440013

रश्मि सिंह
निदेशक (वाणिज्य)



संदेश

प्रिय साथियों,

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं!!

मुझे यह जानकारी अत्यंत प्रसन्नता हुई कि मॉयल लिमिटेड द्वारा मॉयल भारती पत्रिका के 12वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

मानवीय सभ्यता के इतिहास में भाषा का प्रयोग सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव है। यह भाषा ही है जिसके माध्यम से हम अपने भावों और विचारों को अभिव्यक्त करते हैं और एक-दूसरे से संवाद करते हैं। प्रत्येक भाषा अपनी संस्कृति का संरक्षण करती है। प्रत्येक देश के नागरिक का यह कर्तव्य होता है कि वह अपनी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए निरंतर प्रयत्नरत रहे। संघ के कामकाज के लिए हिंदी को संविधान द्वारा राजभाषा का दर्जा दिया गया है। सरकारी कामकाज से जुड़े होने के नाते राजभाषा का प्रचार-प्रसार करना, उसके कार्यान्वयन को गति प्रदान करना हम सब का दायित्व है। भाषा के प्रचार-प्रसार में पत्र-पत्रिकाओं की महती भूमिका होती है। अतः राजभाषा के प्रचार प्रसार के लिए मॉयल लिमिटेड द्वारा मॉयल भारती पत्रिका के 12वें अंक का प्रकाशन किया जाना एक सराहनीय कदम है।

मुझे विश्वास है कि मॉयल भारती, मॉयल लिमिटेड में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। मॉयल भारती के 12वें अंक के लिए शुभकामनाएं।

रश्मि सिंह

रश्मि सिंह



मॉयल लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

मॉयल भवन, 1-ए, काटोल रोड,
नागपुर- 440013

एसवीआर चन्द्रशेखर

मुख्य सतर्कता अधिकारी, केआईओसीएल
(अतिरिक्त प्रभार) मॉयल लिमिटेड



संदेश

प्रिय साथियों,

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं!!

हिन्दी हमारी राष्ट्रीय पहचान होने के साथ-साथ हमारी सांस्कृतिक समृद्धि और विरासत का प्रतीक भी है। संविधान में हिन्दी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया गया है इसलिए हम सभी का संवैधानिक कर्तव्य है कि हम अपना सरकारी कामकाज हिन्दी में ही करें। हिन्दी में कामकाज बढ़ाने के लिए अधिकारी और कर्मचारी मौलिक रूप से हिन्दी में कामकाज करने का प्रयास करें तभी राजभाषा की वास्तविक प्रगति संभव है।

राजभाषा पत्रिका का उद्देश्य राजभाषा के प्रचार प्रसार के साथ-साथ कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा प्रदर्शित एवं विकसित करने हेतु उपयुक्त मंच प्रदान करना होता है।

पत्रिका के प्रकाशन से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से संबद्ध सभी सदस्यों एवं इसमें शामिल सभी लेखकों एवं रचनाकारों को उनके प्रयास के लिए मैं हार्दिक बधाई देता हूँ।

मेरा पूर्ण विश्वास है कि 'मॉयल भारती' का 12वां अंक भी राजभाषा कार्यान्वयन में सहायक सिद्ध होगा।

पत्रिका की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

चक्र

एसवीआर चन्द्रशेखर

संपादक मंडल

अजित कुमार सक्सेना

अध्यक्ष
सह प्रबंध निदेशक

उषा सिंह

निदेशक
(मानव संसाधन)

नितीन पागनीस

संयुक्त महाप्रबंधक (कार्मिक)

एन. डी. पाण्डेय

कंपनी सचिव

पूजा वर्मा

राजभाषा अधिकारी

संपादकीय



प्रिय पाठकगण !

मॉयल भारती का बारहवाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए बहुत हर्ष हो रहा है। आप सभी की प्रेरणा और सहयोग से यह पत्रिका उत्तरोत्तर उत्कृष्टता को प्राप्त कर रही है। अतः एव संरक्षक, संपादक मंडल, सहयोगी रचनाकार एवं पाठकों सहित पत्रिका से जुड़े सभी पक्षों का साभार धन्यवाद।

पत्रिका अपने छठे वर्ष की यात्रा करते हुए, पुनः रचनात्मक एवं ज्ञानवर्धक सामग्री के साथ आपके हाथों में है। इस अंक में, हमारे अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक महोदय ने पुनः सभी से अपनी प्रतिबद्धता निभाते हुए वर्ष 2024- 25 के लक्ष्यों को रणनीति स्तर पर प्राप्त करने का आवाहन किया है। वास्तव में, उनकी प्रेरणा ही हमारी उर्जा है।

अंक में नियमित रूप से कविता, कहानी, व्यंग्य आदि का भी समावेश किया गया है। पत्रिका में राजभाषा संबंधी प्रेरक एवं मार्गदर्शक सामग्री को भी पर्याप्त स्थान दिया गया है।

मॉयल भारती को इस मुकाम तक पहुँचाने में आप सभी का योगदान ही संजीवनी बना है। विश्वास है इस बार भी आपकी प्रतिक्रिया हमारा मार्गदर्शन करेगी। पत्रिका का ई-संस्करण कंपनी की वेबसाइट और राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की वेबसाइट पर दर्शाया गया है।

आने वाले पर्वों की हार्दिक शुभकामनाओं सहित साभार धन्यवाद।

जय भारत, जय राजभाषा !

पूजा वर्मा

संपादक-मॉयल भारती

अस्वीकरण

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। कंपनी का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए भी लेखक स्वयं जिम्मेदार हैं।

राष्ट्रपति आदेश



राष्ट्रपति आदेश 1952

- 27 मई 1952 को जारी किया गया जिसके अंतर्गत:-
- राज्यों के राज्यपालों
- उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों और
- उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्तियों के अधिपत्रों के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा तथा अंकों के अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप के अतिरिक्त देवनागरी अंकों का प्रयोग प्राधिकृत किया गया है।

राष्ट्रपति आदेश 1955

यह आदेश 3 दिसम्बर 1955 को जारी किया गया। इसके अंतर्गत 7 आदेश शामिल हैं, जिसमें प्रमुखतया :

- जनता के साथ पत्र व्यवहार
- जिन राज्यों ने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में अपना लिया है, उनके साथ पत्र व्यवहार।
- अन्य देशों की सरकारों, उनके दूतों तथा संगठनों से पत्र व्यवहार
- राजनयिक और कौंसुलीय पदाधिकारियों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में भारतीय प्रतिनिधियों के नाम जारी औपचारिक दस्तावेज़।
- प्रशासनिक रिपोर्ट, संधियां, करार इत्यादि में अंग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जाए।

राष्ट्रपति आदेश 1960 (27 अप्रैल 1960 को जारी)

यह आदेश 27 अप्रैल 1960 को जारी किया गया जिसमें 14 आदेश शामिल हैं जिनमें 3, 4, 11 और 13 अनुवाद से संबंधित हैं।

- प्रथम राजभाषा आयोग की सिफारिशों पर गठित संसदीय समिति की राष्ट्रपति को प्रस्तुत रिपोर्ट...
- शब्दावली निर्माण - मुख्य लक्ष्य स्पष्टता, यथार्थता और सरलता हो।
 - अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली अपनाना और अनुकूलन करना.
 - भारतीय भाषाओं के शब्दों में एकरूपता का प्रयास.
 - हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं की शब्दावली में केंद्र और राज्यों द्वारा किए जा रहे प्रयासों में समन्वय की आवश्यकता.-

प्रामाणिक शब्दकोश के लिए स्थायी आयोग गठित करने का सुझाव जिसके सदस्य वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीविद हों.

- वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग (Commission for Scientific and Technical Terminology (CSTT)) का 1 अक्टूबर 1961 को गठन

राष्ट्रपति आदेश 1960 (27 अप्रैल 1960 को जारी)

- प्रशासनिक संहिताओं, मैनुअल और अन्य कार्यविधि साहित्य का अनुवाद किसी अभिकरण को सौंप दिया जाए। उनका सुझाव था कि इस काम को विधि मंत्रालय करे और भारतीय भाषाओं में इन अनुवादों की शब्दावली में एकरूपता हो।
- अधिनियमों तथा विधेयकों की भाषा
 - संसदीय विधियां अंग्रेजी में बनती रहें परंतु उसका प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद उपलब्ध कराया जाए।
 - जहां राज्य विधान मण्डल द्वारा पास किए गए विधेयकों का मूल पाठ हिन्दी से भिन्न किसी भाषा में है, वहां 348 (3) के अंतर्गत अंग्रेजी अनुवाद के अलावा उसका हिंदी अनुवाद भी प्रकाशित किया जाए।
- विधि के क्षेत्र में हिन्दी में काम करने के लिए आवश्यक आरंभिक कदम
 - मानक विधिक शब्दकोश, विधि शब्दावली तैयार करने के लिए भारतीय भाषाओं के विशेषज्ञों की समिति बनाई जाए। केंद्र और राज्य सरकार मिलकर यह कार्य करे।

राष्ट्रपति आदेश 1960 (27 अप्रैल 1960 को जारी)

- उच्चतम न्यायालय तथा उच्च न्यायालय की भाषा
- कर्मचारियों का हिन्दी प्रशिक्षण
- प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण का माध्यम
- हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए योजना का कार्यक्षेत्र

आदि विषयों पर व्यापक आदेश दिए गए हैं जिसकी विस्तृत जानकारी www.rajbhasha.gov.in से हासिल की जा सकती है।

संवैधानिक प्रावधान

भारत के संविधान में राजभाषा से संबंधित भाग-17



अध्याय 1- संघ की भाषा

अनुच्छेद 120. संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा -

1. भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, संसद में कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा

परंतु, यथास्थिति, राज्य सभा का सभापति या लोक सभा का अध्यक्ष अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी सदस्य को, जो हिंदी में या अंग्रेजी में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृ-भाषा में सदन को संबोधित करने की अनुज्ञा दे सकेगा।

2. जब तक संसद विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो " या अंग्रेजी में " शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो।

अनुच्छेद 210: विधान-मंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषा -

1. भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, राज्य के विधान-मंडल में कार्य राज्य की राजभाषा या राजभाषाओं में या हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा

परंतु, यथास्थिति, विधान सभा का अध्यक्ष या विधान परिषद का सभापति अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी सदस्य को, जो पूर्वोक्त भाषाओं में से किसी भाषा में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुज्ञा दे सकेगा।

2. जब तक राज्य का विधान-मंडल विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो " या अंग्रेजी में " शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो

(परंतु हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय और त्रिपुरा राज्यों के विधान-मंडलों के संबंध में, यह खंड इस प्रकार प्रभावी होगा मानो इसमें आने वाले 'पंद्रह वर्ष' शब्दों के स्थान पर 'पच्चीस वर्ष' शब्द रख दिए गए हों।

परंतु यह और कि अरुणाचल प्रदेश, गोवा और मिजोरम राज्यों के विधान-मंडलों के संबंध में यह खंड इस प्रकार प्रभावी होगा मानो इसमें आने वाले "पंद्रह वर्ष" शब्दों के स्थान पर "चालीस वर्ष" शब्द रख दिए गए हों।)

अनुच्छेद 343 संघ की राजभाषा-

1. संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

2. खंड (1) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था।

परन्तु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान, आदेश द्वारा, संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।

अ. अंग्रेजी भाषा का, या

ब. अंकों के देवनागरी रूप का,

ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएं।

अनुच्छेद 344 राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति-

1. राष्ट्रपति, इस संविधान के प्रारंभ से पांच वर्ष की समाप्ति पर और तत्पश्चात ऐसे प्रारंभ से दस वर्ष की समाप्ति पर, आदेश द्वारा, एक आयोग गठित करेगा जो एक अध्यक्ष और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट विभिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले ऐसे अन्य

सदस्यों से मिलकर बनेगा जिनको राष्ट्रपति नियुक्त करे और आदेश में आयोग द्वारा अनुसरण की जाने वाली प्रक्रिया परिनिश्चित की जाएगी।

2. आयोग का यह कर्तव्य होगा कि वह राष्ट्रपति को--

- अ. संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी भाषा के अधिकाधिक प्रयोग,
- ब. संघ के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा के प्रयोग पर निर्बंधनों,
- स. अनुच्छेद 348 में उल्लिखित सभी या किन्हीं प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा,
- द. संघ के किसी एक या अधिक विनिर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने वाले अंकों के रूप,
- ई. संघ की राजभाषा तथा संघ और किसी राज्य के बीच या एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच पत्रादि की भाषा और उनके प्रयोग के संबंध में राष्ट्रपति द्वारा आयोग को निर्देशित किए गए किसी अन्य विषय, के बारे में सिफारिश करे।

3. खंड (2) के अधीन अपनी सिफारिशें करने में, आयोग भारत की औद्योगिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक उन्नति का और लोक सेवाओं के संबंध में अहिंदी भाषी क्षेत्रों के व्यक्तियों के न्यायसंगत दावों और हितों का सम्यक ध्यान रखेगा।

4. एक समिति गठित की जाएगी जो तीस सदस्यों से मिलकर बनेगी जिनमें से बीस लोक सभा के सदस्य होंगे और दस राज्य सभा के सदस्य होंगे जो क्रमशः लोक सभा के सदस्यों और राज्य सभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगे।

5. समिति का यह कर्तव्य होगा कि वह खंड (1) के अधीन गठित आयोग की सिफारिशों की परीक्षा करे और राष्ट्रपति को उन पर अपनी राय के बारे में प्रतिवेदन दे।

6. अनुच्छेद 343 में किसी बात के होते हुए भी, राष्ट्रपति खंड (5) में निर्दिष्ट प्रतिवेदन पर विचार करने के पश्चात उस संपूर्ण प्रतिवेदन के या उसके किसी भाग के अनुसार निदेश दे सकेगा।

अध्याय 2- प्रादेशिक भाषाएं

अनुच्छेद 345. राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं

अनुच्छेद 346 और अनुच्छेद 347 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, किसी राज्य का विधान-मंडल, विधि द्वारा, उस राज्य में प्रयोग होने

वाली भाषाओं में से किसी एक या अधिक भाषाओं को या हिंदी को उस राज्य के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा या भाषाओं के रूप में अंगीकार कर सकेगा:

परंतु जब तक राज्य का विधान-मंडल, विधि द्वारा, अन्यथा उपबंध न करे तब तक राज्य के भीतर उन शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका इस संविधान के प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था।

अनुच्छेद 346. एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा

संघ में शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने के लिए तत्समय प्राधिकृत भाषा, एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच तथा किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा होगी।

परंतु यदि दो या अधिक राज्य यह करार करते हैं कि उन राज्यों के बीच पत्रादि की राजभाषा हिंदी भाषा होगी तो ऐसे पत्रादि के लिए उस भाषा का प्रयोग किया जा सकेगा।

अनुच्छेद 347. किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध-

यदि इस निमित्त मांग किए जाने पर राष्ट्रपति का यह समाधान हो जाता है कि किसी राज्य की जनसंख्या का पर्याप्त भाग यह चाहता है कि उसके द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राज्य द्वारा मान्यता दी जाए तो वह निदेश दे सकेगा कि ऐसी भाषा को भी उस राज्य में सर्वत्र या उसके किसी भाग में ऐसे प्रयोजन के लिए, जो वह विनिर्दिष्ट करे, शासकीय मान्यता दी जाए।

अध्याय 3 - उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों आदि की भाषा

अनुच्छेद 348. उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में और अधिनियमों, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा--

1. इस भाग के पूर्वगामी उपबंधों में किसी बात के होते हुए भी, जब तक संसद विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक--

अ. उच्चतम न्यायालय और प्रत्येक उच्च न्यायालय में सभी कार्यवाहियां अंग्रेजी भाषा में होंगी,

ब. (i) संसद के प्रत्येक सदन या किसी राज्य के विधान-मंडल के सदन या प्रत्येक सदन में पुरःस्थापित किए जाने वाले सभी विधेयकों या प्रस्तावित किए जाने वाले उनके संशोधनों के,

(ii) . संसद या किसी राज्य के विधान-मंडल द्वारा पारित सभी अधिनियमों के और राष्ट्रपति या किसी राज्य के राज्यपाल द्वारा

प्रख्यापित सभी अध्यादेशों के, और

(iii) इस संविधान के अधीन अथवा संसद या किसी राज्य के विधान-मंडल द्वारा बनाई गई किसी विधि के अधीन निकाले गए या बनाए गए सभी आदेशों, नियमों, विनियमों और उपविधियों के, प्राधिकृत पाठ अंग्रेजी भाषा में होंगे।

2. खंड (1) के उपखंड (क) में किसी बात के होते हुए भी, किसी राज्य का राज्यपाल राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से उस उच्च न्यायालय की कार्यवाहियों में, जिसका मुख्य स्थान उस राज्य में है, हिन्दी भाषा का या उस राज्य के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाली किसी अन्य भाषा का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा:

परंतु इस खंड की कोई बात ऐसे उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए किसी निर्णय, डिक्री या आदेश को लागू नहीं होगी।

3. खंड (1) के उपखंड (ख) में किसी बात के होते हुए भी, जहां किसी राज्य के विधान-मंडल ने, उस विधान-मंडल में पुरःस्थापित विधेयकों या उसके द्वारा पारित अधिनियमों में अथवा उस राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित अध्यादेशों में अथवा उस उपखंड के पैरा (iv) में निर्दिष्ट किसी आदेश, नियम, विनियम या उपविधि में प्रयोग के लिए अंग्रेजी भाषा से भिन्न कोई भाषा विहित की है वहां उस राज्य के राजपत्र में उस राज्य के राज्यपाल के प्राधिकार से प्रकाशित अंग्रेजी भाषा में उसका अनुवाद इस अनुच्छेद के अधीन उसका अंग्रेजी भाषा में प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

अनुच्छेद 349. भाषा से संबंधित कुछ विधियां अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया -

इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि के दौरान, अनुच्छेद 348 के खंड (1) में उल्लिखित किसी प्रयोजन के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा के लिए उपबंध करने वाला कोई विधेयक या संशोधन संसद के किसी सदन में राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी के बिना पुरःस्थापित या प्रस्तावित नहीं किया जाएगा और राष्ट्रपति किसी ऐसे विधेयक को पुरःस्थापित या किसी ऐसे संशोधन को प्रस्तावित किए जाने की मंजूरी अनुच्छेद 344 के खंड (1) के अधीन गठित आयोग की सिफारिशों पर और उस अनुच्छेद के खंड (4) के अधीन गठित समिति के प्रतिवेदन पर विचार करने के पश्चात ही देगा, अन्यथा नहीं।

अध्याय 4 - विशेष निदेश

अनुच्छेद 350. व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा

- प्रत्येक व्यक्ति किसी व्यथा के निवारण के लिए संघ या राज्य के किसी अधिकारी या प्राधिकारी को, यथास्थिति, संघ में या राज्य में प्रयोग होने वाली किसी भाषा में अभ्यावेदन देने का हकदार होगा।

अनुच्छेद 350 क. प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएं-

प्रत्येक राज्य और राज्य के भीतर प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के बालकों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा और राष्ट्रपति किसी राज्य को ऐसे निदेश दे सकेगा जो वह ऐसी सुविधाओं का उपबंध सुनिश्चित कराने के लिए आवश्यक या उचित समझता है।

अनुच्छेद 350 ख. भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए विशेष अधिकारी-

1. भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए एक विशेष अधिकारी होगा जिसे राष्ट्रपति नियुक्त करेगा।

2. विशेष अधिकारी का यह कर्तव्य होगा कि वह इस संविधान के अधीन भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए उपबंधित रक्षोपायों से संबंधित सभी विषयों का अन्वेषण करे और उन विषयों के संबंध में ऐसे अंतरालों पर जो राष्ट्रपति निर्दिष्ट करे।

राष्ट्रपति को प्रतिवेदन दे और राष्ट्रपति ऐसे सभी प्रतिवेदनों को संसद के प्रत्येक सदन के समक्ष रखवाएगा और संबंधित राज्यों की सरकारों को भिजवाएगा।

अनुच्छेद 351. हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश -

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्थानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

अंग्रेजी हिंदी शब्द

अंग्रेजी	हिंदी	अंग्रेजी	हिंदी
Acceptance	स्वीकार, स्वीकृत	Class	वर्ग
Accident	दुर्घटना	Classification	वर्गीकरण
Accident Policy	दुर्घटना बीमापत्र	Deduction	कटौतियां
Account for	उत्तरदायी होना	Defense Witness	बचाव पक्ष का गवाह
Acknowledge	स्वीकार करना	Defendant	प्रतिवादी
Acknowledgement	पावती, रजिस्ट्री	Deferred Pay	स्थगित वेतन
Acquire	अधिग्रहण करना	Defiance	अवज्ञा
Acquisition of land	भूमि अधिग्रहण करना	Elucide	स्पष्ट, विशद
Acquit	दोषमुक्त कर देना	Enquiry Office	जांच अधिकारी
Act	विधान, अधिनियम	Environment	पर्यावरण
Acting	कार्यकारी	Essential Qualification	अनिवार्य योग्यता
Action taken	की गई कार्यवाही	Establishment	स्थापन
Activities	गतिविधि, काम	File a Suite	मुकदमा दायर करना
Actual	वास्तविक	Filling of Documents	मुकदमे में प्रमाणपत्रों का दाखिला
Adjourned	स्थगित	File Personal	वैयक्तिक फाइल
Bipartite	द्विपक्षीय	Final	अंतिम
Board of Trustee	न्यासी मंडल	Finalise	अंतिम रूप देना
Budget allotment	बजट आवंटन	Good Conduct	सदाचार
Bonafide	प्रामाणिक	Goods Train	मालगाड़ी
Bye Election	उप निर्वाचन/चुनाव	Go Slow	धीमी गति से चलो
By Law	उप विधि	Grade	वर्ग, श्रेणी
By Order	आज्ञा से	Grant	अनुदान
By return of post	लौटती डाक से	Granted	अनुदत्त
By Special Messenger	विशेष संदेश वाहक द्वारा	Hereafter	इसके पश्चात
Charge Allowance	प्रभार भत्ता	Honesty	ईमानदारी
Chargeable	कर योग्य/प्रभार	Honorarium	मानदेय
Charge Sheet	आरोप पत्र	Hon'ble	माननीय
Charter of Demand	मांग पत्र	Hereby	इसके द्वारा
Check & Put up	जांच करके प्रस्तुत	Circumstances	परिस्थिति
Chief Guest	मुख्य अतिथि	Clarify	स्पष्ट करना
In addition to	इसके अतिरिक्त	Through	द्वारा

अंग्रेजी हिंदी शब्द

अंग्रेजी	हिंदी	अंग्रेजी	हिंदी
In any case	किसी अवस्था में	Threat	धमकी
In as much as	जहा तक कि	Penalty	दण्ड
In advance	पहले से	Reconsider	पुनर्विचार करना
In aid to	की सहायता से	Reconstitution	पुनर्गठन
Jurisdiction	क्षेत्राधिकार	Recorded	अभिलेखबद्ध
Justice	न्याय	Recoverable	वसूली योग्य
Judicial Proceeding	न्यायिक कार्यवाही	Recruitment	भर्ती
Leave Disability	असमर्थता छुट्टी	Seal	मुहर
Leave Maternity	प्रसुति छुट्टी	Sealed	मुद्रांकित, मुहरबंद
Library	पुस्तकालय	Sealed Samples	मुहरबंद नमूने
Licence	अनुज्ञप्ति	Secondary Evidence	गौण साक्ष्य
Licencing Authority	अनुज्ञापन प्राधिकारी	Secretariat	सचिवालय
Matter	विषय, पदार्थ, मामला	Secretary	सचिव
May be returned	लौटा दिया जाए	Section	धारा, उपविभाग
May be considered	विचार किया जाए	Serious Misconduct	गंभीर कदाचार
May be obtained	प्राप्त किया जाए	Service Conditions	शेवा शर्तें
Mental Alertness	मानसिक सावधानी	Therefor	तदर्थ, उसके लिए
Non Employment	बेकारी	Therein	तदन्तर्गत, उसमें
None Note	नोट नहीं	Thereif	उसका
Note for future Guidance	भविष्य के मार्गदर्शन के लिए देखे	Thereon	उसपर
Note and Return	देखकर लौटा दे	Thereto	उसके विषय में
Note Carefully	सावधानिया से देखे	Thereunder	उसके पूर्व
Office Suptt.	कार्यालय अधीक्षक	Thereunder	तदनुसार
Officiate	स्थानापन्न होना	Therewith	उसके साथ
Official Duty	अधिकारिक कार्य	Threat	धमकी
Office on Special Duty	विशेष कार्याधिकारी	Through Proper Channel	उचित माध्यम से
On Average Pay	औसत वेतन पर	Through	द्वारा
Pay revision	वेतन पुनरीक्षण	Time rate	समय दर
Pay Special	विशेष वेतन	To be followed	अनुसरणीय
Pay time scale	कालमान वेतन	To Ensure	पक्का निश्चय करना
Penal	नामिमान, पैनल	To Forward	प्रेषित करना

शुद्ध अशुद्ध शब्द

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
इधर	ईधर	ताकी	ताकि	प्रमात्मा	परमात्मा
इसाई	ईसाई	ताबुत	ताबूत	प्रदर्शन	प्रदर्शन
इस्कूल	स्कूल	तिथी	तिथि	प्रविन	प्रवीण
ईच्छा	इच्छा	तिलस्म	तिलिस्म	प्रविष्ठ	प्रविष्ट
ईमारत	इमारत	परीवार	परिवार	शिर्षक	शीर्षक
ईसलिए	इसलिए	पर्देश	प्रदेश	भि	भी
उंगली	ऊँगली	पश्चाताप	पश्चात्ताप	पुरे	पूरे
उंतीस	उनतीस	पांचवा	पाँचवाँ	सुरक्षीत	सुरक्षित
उज्वल	उज्ज्वल	पांडे	पांडेय	स्मसान	श्मशान
उदघाटन	उद्घाटन	पितांबर	पीतांबर	सन्मान	सम्मान
उद्यत	उद्यत	पुर्णिमा	पूर्णिमा	स्वास्थ	स्वास्थ्य
उधम	ऊधम	पुर्नजन्म	पुनर्जन्म	प्राप्ती	प्राप्ति
उधाहरण	उदाहरण	पुर्नमतदन	पुनर्मतदान	तृप्ती	तृप्ति
उनंचास	उनचास	पुर्नवास	पुनर्वास	शक्ती	शक्ति
उपजाउ	उपजाऊ	पुर्नुत्थान	पुनरुत्थान	अतिथी	अतिथि
उपरोक्त	उपयुक्त	पुष्पांजली	पुष्पांजलि	मिस्लिम	मुस्लिम
उपलक्ष	उपलक्ष्य	पुसतक	पुस्तक	पुर्व	पूर्व
उमरना	उमड़ना	पूँछकर	पूछकर	काफि	काफी
झोपड़ी	झोंपड़ी	पूँछना	पूछना	लागु	लागू
टिप्पड़ी	टिप्पणी	पूज्यनीय	पूजनीय	टुल्स	टूल्स
टेलिविज़न	टेलीविज़न	पूर्ती	पूर्ति	त्यौहार	त्योहार
ठिक	ठीक	पूर्वार्द	पूर्वार्ध (पूर्वार्द्ध)	अधार	आधार
डाकूओं	डाकुओं	पेंचीदा	पेचीदा	अगामी	आगामी
ड्राइवर	ड्राइवर	पोधा	पौधा	अतिथी	अतिथि
ढकेला	धकेला	प्रकृतिक	प्राकृतिक	ग्रहणी	गृहिणी
ढाँकना	ढाँकना	प्रक्रति	प्रकृति	आर्दश	आदर्श
ढूँढना	ढूँढना	प्रतिक्षा	प्रतीक्षा	पती	पति
तत्कालिक	तात्कालिक	प्रतिनिध	प्रतिनिधि	उपर	ऊपर
तत्व	तत्त्व	प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी	चढना	चढ़ना
तत्वाधान	तत्त्वावधान	प्रदेस	प्रदेश	पलि	पत्नी
तबियत	तबीयत	प्रमाणिक	प्रामाणिक	धोका	धोखा

दैनिक प्रयोग में लाए जाने वाले शब्द

क	K	का	KA	कि	KI	की	KEE	कु	KU	कू	KOO
के	KE	कै	KAI	को	KO	कौ	KAU	कं	KAN	कः	KAH
ख	KH	खा	KHA	खि	KHI	खी	KHEE	खु	KHU	खू	KHOO
खे	KHE	खै	KHAI	खो	KHO	खौ	KHAU	खं	KHAN	खः	KHAH
ग	G	गा	GA	गि	GI	गी	GEE	गु	GU	गू	GOO
गे	GE	गै	GAI	गो	GO	गौ	GAU	गं	GAN	गः	GAH
घ	GH	घा	GHA	घि	GHI	घी	GHEE	घु	GHU	घू	GHOO
घे	GHE	घै	GHAI	घो	GHO	घौ	GHAU	घं	GHAN	घः	GHAH
च	CH	चा	CHA	चि	CHI	ची	CHEE	चु	CHU	चू	CHOO
चे	CHE	चै	CHAI	चो	CHO	चौ	CHAU	चं	CHAN	चः	CHAH
छ	CHH	छा	CHHA	छि	CHHI	छी	CHHEE	छु	CHHU	छू	CHHOO
छे	CHHE	छै	CHHAI	छो	CHHO	छौ	CHHAU	छं	CHHAN	छः	CHHAH
ज	J	जा	JA	जि	JI	जी	JEE	जु	JU	जू	JOO
जे	JE	जै	JAI	जो	JO	जौ	JAU	जं	JAU	जः	JAH
झ	JH	झा	JHA	झि	JHI	झी	JHEE	झु	JHU	झू	JHOO
झे	JHE	झै	JHAI	झो	JHO	झौ	JHAU	झं	JHAN	झः	JHAH
ट	T	टा	TA	टि	TI	टी	TEE	टु	TU	टू	TOO
टे	TE	टै	TAI	टो	TO	टौ	TAU	टं	TAN	टः	TAH
ठ	TH	ठा	THA	ठि	THI	ठी	THEE	ठु	THU	ठू	THOO
ठे	THE	ठै	THAI	ठो	THO	ठौ	THAU	ठं	THAN	ठः	THAH
ड	D	डा	DA	डि	DI	डी	DEE	डु	DU	डू	DOO
डे	DE	डै	DAI	डो	DO	डौ	DAU	डं	DAN	डः	DAH
ढ	DH	ढा	DHA	ढि	DHI	ढी	DHEE	ढु	DHU	ढू	DHOO
ढे	DHE	ढै	DHAI	ढो	DHO	ढौ	DHAU	ढं	DHAN	ढः	DHAH
ण	NH	णा	NHA	णि	NHI	णी	NHEE	णु	NHU	णू	NHOO
णे	NHE	णै	NHAI	णो	NHO	णौ	NHAU	णं	NHAN	णः	NHAH
त	T	ता	TA	ति	TI	ती	TEE	तु	TU	तू	TOO
ते	TE	तै	TAI	तो	TO	तौ	TAU	तं	TAN	तः	TAH
थ	TH	था	THA	थि	THI	थी	THEE	थु	THU	थू	THOO
थे	THE	थै	THAI	थो	THO	थौ	THAU	थं	THAN	थः	THAH
द	D	दा	DA	दि	DI	दी	DEE	दु	DU	दू	DOO
दे	DE	दै	DAI	दो	DO	दौ	DAU	दं	DAN	दः	DAH
घ	DH	घा	DHA	घि	DHI	घी	DHEE	घु	DHU	घू	DHOO

दैनिक प्रयोग में लाए जाने वाले शब्द

घे	DHE	घै	DHAI	घो	DHO	घौ	DHAU	घं	DHAN	घः	DHAH
न	N	ना	NA	नि	NI	नी	NEE	नु	NU	नू	NOO
ने	NE	नै	NAI	नो	NO	नौ	NAU	नं	NAN	नः	NAH
प	PH	पा	PA	पि	PI	पी	PEE	पु	PU	पू	POO
पे	PE	पै	PAI	पो	PO	पौ	PAU	पं	PAN	पः	PAH
फ	PH	फा	PHA	फि	PHI	फी	PHEE	फु	PHU	फू	PHOO
फे	PHE	फै	PHAI	फो	PHO	फौ	PHAU	फं	PHAN	फः	PHAH
ब	B	बा	BA	बि	BI	बी	HEE	बु	BU	बू	BOO
बे	BE	बै	BAI	बो	BO	बौ	BAU	बं	BAN	बः	BAH
भ	BH	भा	BHA	भि	BHI	भी	BHEE	भु	BHU	भू	BHOO
भे	BHE	भै	BHAI	भो	BHO	भौ	BHAU	भं	BHAN	भः	BHAAH
म	M	मा	MA	मि	MI	मी	MEE	मु	MU	मू	MOO
मे	ME	मै	MAI	मो	MO	मौ	MAU	मं	MAN	मः	MAH
य	Y	या	YA	यि	YI	यी	YEE	यु	YU	यू	YOO
ये	YE	यै	YAI	यो	YO	यौ	YAU	यं	YAN	यः	YAH
र	R	रा	RA	रि	RI	री	REE	रु	RU	रू	ROO
रे	RE	रै	RAI	रो	RO	रौ	RAU	रं	RAN	रः	RAH
ल	L	ला	LA	लि	LI	ली	LEE	लु	LU	लू	LOO
ले	LE	लै	LAI	लो	LO	लौ	LAU	लं	LAN	लः	LAH
व	V	वा	VA	वि	VI	वी	VEE	वु	VU	वू	VOO
वे	VE	वै	VAI	वो	VO	वौ	VAU	वं	VAN	वः	VAH
श	SH	शा	SHA	शि	SHI	शी	SHEE	शु	SHU	शू	SHOO
शे	SHE	शै	SHAI	शो	SHO	शौ	SHAU	शं	SHAN	शः	SAAH
ष	SH	षा	SHA	षि	SHI	षी	SHEE	षु	SHU	षू	SHOO
षे	SHE	षै	SHAI	षो	SHO	षौ	SHAU	षं	SHAN	षः	SHAH
स	S	सा	SA	सि	SI	सी	SEE	सु	SU	सू	SOO
से	SE	सै	SAI	सो	SO	सौ	SAU	सं	SAN	सः	SAH
ह	H	हा	HA	हि	HI	ही	HEE	हु	HU	हू	HOO
हे	HE	है	HAI	हो	HO	हौ	HAU	हं	HAN	हः	HAH
क्ष	KSH	क्षा	KSHA	क्षि	KSHI	क्षी	KSHEE	क्षु	KSHU	क्षू	KSHOO
क्षे	KSHE	क्षै	KSHAI	क्षो	KSHO	क्षौ	SHAU	क्षं	KSHAN	क्षः	KSHAH
ज्ञ	GY	ज्ञा	GYA	ज्ञि	GYI	ज्ञी	GYEE	ज्ञु	GYU	ज्ञू	GYOO
ज्ञे	GYE	ज्ञै	GYAI	ज्ञो	GYO	ज्ञौ	GYAU	ज्ञं	GYAN	ज्ञः	GYAH

हिन्दी में काम करने के चार सूत्र:

संक्षिप्त टिप्पणी निम्नांकित है A brief note is palced below	कृपया शीघ्र कार्रवाई करें Immediate action please
कार्रवाई अभी शुरू नहीं की गई है Action has not yet been initiated	स्वीकृत की प्रतीक्षा Acceptance is awaited
प्रस्ताव अनुसार कार्रवाई की जाए Action may be taken as proposed	प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त कर लिया जाए Administrative approval may be obtained
सभी संबंधित व्यक्ति इसे ध्यान से नोट कर लें All concerned should note carefully	समुचित विचार के बाद After adequate Consideration
इस मामले में कार्रवाई की जा चुकी है Action has already been taken in the matter	अधिकतम जानकारी और विश्वास के साथ Best to knowledge and belief to the
टिप्पणी के अनुसार अनुमोदित Approved as per remark	उक्त अवधि के बाद Beyond the said period
उपरोक्तानुसार As above	जांच की और सही पाया Checked and found correct
दैनिक प्रशासनिक कार्य Day to day administrative work	आवश्यक चीजें स्थानीय स्तर पर खरीद लें Essential articles may be purchased locally
निर्णय की प्रतीक्षा Decision is awaited	कृपया अनुमोदन के लिए For approval please
इस मामले में औपचारिक अनुमोदन जरूरी है Formal approval is necessary in this case	वित्तीय सहमति Financial Concurrence
अनुरोध है कि शीघ्र आदेश दे Early order s solicited	कृपया तुरंत कार्रवाई करें Immediate action please
आवश्यक कार्रवाई करें Necessary action should be taken	आज ही भेजिए Issue today
आदेश जारी करें Order may be issued	अविलंब Without delay
मामला विचाराधीन है Matter is under consideration	भवदीय Yours faithfully
आगे मार्गदर्शन के लिए नोट किया गया Noted for further guidance	प्रस्ताव अपने आप में स्पष्ट है The proposal is self explanatory
कृपया सभी को दिखाकर फाइल कर दीजिए Please circulate and file	जब कभी यह जरूरी समझा जाए Whenever it is found necessary
संबंधित कागजों के साथ प्रस्तुत करें Please put up with relevant papers	कृपया स्वतः पूर्ण टिप्पणी प्रस्तुत कीजिए Please put up a self-contained note

मानक वर्तनी (लिपि) : कठिनाइयाँ और समाधान

राजभाषा नियम, 1976

हिंदी के अनुमानित ज्ञान के आधार पर देश के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों, यथा – क, ख, ग में परिभाषित किया गया है

क्षेत्र 'क' से

बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

क्षेत्र 'ख' से

गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं;

क्षेत्र 'ग' से

[खंड (1) और (2)]

में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

1976 के नियम तमिलनाडु को लागू नहीं होते हैं।



वाक्य शुद्धि

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
मैं भोजन कर रहा हू।	मैं भोजन कर रहा हूँ।
क्योकी वह वहा पर नही था।	क्योंकि वह वहाँ पर नहीं था।
उन्हे पैसा दीजिए।	उन्हें पैसा दीजिए।
कार्य किजिए।	कार्य कीजिए।
पीता जी आ रहा है।	पीता जी आ रहे हैं।
यहा दवाईया दी जाती है।	यहाँ दवाइयाँ दी जाती हैं।
उसने काम कीया है।	उसने काम किया है।
वे भोजन कर रहे है।	वे भोजन कर रहे हैं।
भाइयों और बहनों यहा बैठिये।	भाइयों और बहनों यहाँ बैठिए।

हिंदी लिखते समय आमतौर पर होने वाली गलतियाँ

कि संबंधी गलतियाँ However ('क' में-ह्रस्व इ) की मात्रा का उपयोग	क्योंकि, चूँकि, बल्कि, हालाँकि, ताकि, जबकि
'इए' संबंधी गलतियाँ 'इए' के ध्वनि का प्रयोग	लीजिए, दीजिए, पीजिए, लिखिए, सोचिए,
ऊँगा, ऊँ, आऊँ संबंधी गलतियाँ	करूँगा, दूँगा, लूँगा, हूँ, दूँ, लूँ, करूँ, जाऊँ, बुलाऊँ (ऊँगा, ऊँ और आऊँ की ध्वनि का प्रयोग)
'क्रिया' संबंधी गलतियाँ है कि, हैं कि, देख कि, सोचा कि, हूँ कि, पाया कि, थे कि क्रिया के बाद 'कि' का प्रयोग होता है (जैसे कि, तक कि, मान लो कि) की - "s, कि - that	क्रिया में 'ए' की संबंधी गलतियाँ क्रिया में 'ए' की मात्रा के बाद ' हैं ' आता है जैसे - वे जाते हैं - ए हम सुनते हैं -ए पिताजी आ रहे हैं - ए उदा. वो मेरे पीछे है। - यहाँ पर बिंदी क्यों नहीं (क्रिया नहीं होने से)
'इक/इत' संबंधी गलतियाँ 'इक/इत' की ध्वनि पर अंत होने वाले शब्द धार्मिक, सैनिक, बौद्धिक, अंकित, रचित केंद्रित (लघु होंगे - बड़ी की मात्रा नहीं लगेगी 98 प्रतिशत) प्रत्यय (Suffix) अपवाद - रमणीक, प्रतीत	ईय' संबंधी गलतियाँ 'ईय' पर अंत होने वाले शब्द - दर्शनीय, पूजनीय, विभागीय, रमणीय, विचारणीय, भवदीय, राष्ट्रीय प्रत्यय - ीय बड़ी ई याँ / यों संबंधी गलतियाँ याँ / यों पर अंत होने वाले शब्द से पहले-ह्रस्व 'इ' का ही प्रयोग होगा -
नदियाँ, कहानियाँ, वादियाँ,	नदियों, कहानियों, वादियों - प्रत्यय ही है

नदी, कहानी, वादी भारतीयों - Exceptional भारत + ईय = भारतीयों

'अनुस्वार' संबंधी गलतियाँ और चंद्रबिंदु में-in में-ख दोनों नहीं उन्हें, इन्हें, देंगे, करेंगे सुनेंगे देखेंगे उन्होंने जिन्होंने जाएँगे पाएँगे लिखेंगे में मैं हमें तुम्हें उन्हें जिन्हें उन्होंने जिन्होंने नहीं क्यों ज्यों त्यों हममें तुममें	लेखन संबंधी गलतियाँ गए, गई, आई, दिए, जाएँगे, नई, बुलाए यही रूप मान्य हैं। गलत है : गये, गई, नयी, दिये
आमंत्रण आमंत्रण किसी विषय विशेष पर विशेष व्यक्ति का बुलावा होता है। आमंत्रण में लक्ष्य होता है। लक्ष्य प्राप्ति के पश्चात आमंत्रण समाप्त हो जाता है। आमंत्रण का अर्थ होता है किसी को भाषण देने, सभा में बुलाने आदि के लिए बुलाना अतः मंत्री, कवि, लेखक लोगों को बोलने या सुनने इत्यादि के लिए आमंत्रण भेजा जाता है।	निमंत्रण किसी अवसर विशेष पर किसी विशेष व्यक्तियों को बुलाया जाता है। उदा. विवाह, जन्मदिन, पार्टी आदि के लिए निमंत्रण भेजा जाता है। निमंत्रण के साथ लोकाचार भी प्रयुक्त होता है।
कार्रवाई इसे एक्शन -(Action) कहते हैं। किसी मामले में सरकार/कार्यालय ने जो एक्शन -(Action) कदम उठाया है, उसे कार्रवाई कहते हैं।	कार्यवाही इसे प्रोसिडिंग (Proceeding) कहते हैं। किसी कार्य के संपादन करने के समय होने वाली आवश्यक क्रियाएँ। संसद या विधान सभा के सदनों में जो कामकाज हुआ उसे कार्यवाही कहते हैं।

इसका अर्थ है, किसी भी नए कार्य को शुरू करने से है। जब किसी कार्य की शुरुआत प्रथम बार (कार्य का आदि) की जाती है, तो उसके लिए आरंभ शब्द का प्रयोग किया जाता है। उदा. भवन निर्माण की शुरुआत करना।

इसका अर्थ है किसी भी कार्य को अच्छी प्रकार से करने से है । जब किसी कार्य की शुरुआत हो जाने के बाद किसी कारण वश वह कार्य बीच में ही रोक दिया जाता है और कुछ समय बाद पुनः उसकी शुरुआत की जाती है, तब शुरुआत शब्द के लिए प्रारंभ का उपयोग

और का अर्थ व, तथा , एवं, या, इसके अलावा, अधिक -AND

केवल ' मे ' का कोई उपयोग नहीं

संबोधन में	लिखते समय	में	में	हमें
साथियो	साथियों	तुम्हें	उन्हे	जिन्हें
भाइयो	भाइयों	उन्हीं	तुम्हीं	जिन्हीं
बहनो	बहनों	उन्होंने	जिन्होंने	नहीं
मित्रो	मित्रों	क्यों	ज्यो	त्यो
		हममें	तुममें	



टिप्पणियाँ

These temporary posts are proposed to be filled	इन अस्थायी पदों को भरा जाना प्रस्तावित है
Vacancies are determined year wise	रिक्तियों का निर्धारण वर्षवार किया जाता है
Benchmark for ----- post is 'Good'	पद के लिए बेंचमार्क अच्छा है
Those who have completed five years of regular service	जिन्होंने अपनी सेवा के पाँच वर्ष पूरे कर लिए हैं
The case is to be placed before the DPC	मामले को विभागीय पदोन्नति समिति को प्रस्तुत किया जाना है
Probation period has been successfully completed	परिवीक्षा अवधि को सफलता पूर्वक पूरा किया गया है
His name will be struck off from the panel	पैनल से उसका नाम हटा दिया गया है
Seniority in feeder grade has been revised	फीडर ग्रेड में वरिष्ठता को संशोधित कर दिया गया है
Collect the information from concerned sections	संबंधित अनुभागों से सूचनाएँ एकत्रित करें
Dispose the matter within 30 days	30 दिनों के अंदर मामले का निपटान करें
Reply the petitioner	याचिकाकर्ता को जवाब दें
Deposit the application fee	आवेदन शुल्क जमा करवाएँ
Why disciplinary action may not be taken	अनुशासनिक कार्यवाई क्यों नहीं की जाए
The warning can be issued to Mr.--	श्री ... को चेतावनी दी जा सकती है
This is the last warning to Mr.-----	श्री ... को यह अंतिम चेतावनी है
A committee may be formed for disciplinary action	अनुशासनिक कार्यवाई करने के लिए समिति का गठन किया जाए
Take action for suspension	निलंबित करने की कार्यवाई करें
The Govt. Servant should not indulge themselves in personal business	सरकारी कर्मचारी, निजी रोजगार न करें
Converted leave may be granted	परिवर्तित छुट्टी दी जा सकती है
Every new entrant in Govt. service is required to declare his/her home town	सरकारी सेवा में प्रवेश करने वाले प्रत्येक कार्मिक द्वारा अपने गृह नगर की घोषणा करना आवश्यक है
Central Govt. offices shall remain closed on the day of poll	चुनाव के दिन केंद्र सरकार के, कार्यालय बंद रहेंगे
LTC for the Family means	परिवार के लिए ली गई छुट्टी यात्रा रियायत (एल टी सी) का अर्थ है
Officer can choose any service provider	अधिकारी किसी भी सेवा प्रदाता को चुन सकते हैं
After operation follow up treatment can be availed up to six months	शल्य चिकित्सा के उपरांत छह माह तक अनुवर्ती इलाज करवाया जा सकता है
The information sought under RTI may be replied immediately	सूचना के अधिकार के तहत मांगी गई सूचना का उत्तर तत्काल दिया जाए

टिप्पणियाँ

Reply may be furnished in stipulated time	उत्तर समय सीमा में भिजवा दिया जाए
Kindly collect the information from concerned sections	संबंधित अनुभागों से सूचनाएँ एकत्र करें
Case may be transferred to the concerned office	मामला संबंधित कार्यालय को स्थानांतरित किया जाए
Nodal Officer is responsible to send the reply	उत्तर भिजवाने की जिम्मेदारी नोडल अधिकारी की है
Please provide required information immediately.	मांगी गई जानकारी तत्काल उपलब्ध करवाएँ
Information received from foreign	विदेशी सरकार से प्राप्त
Information confidential.	सूचनाएँ गोपनीय हैं
Process of development depends on the availability of information, therefore it is important	चूंकि सूचना की उपलब्धि पर विकास की प्रक्रिया निर्भर है, इसलिए यह महत्वपूर्ण है
Right to information is indispensable for the functioning of a true democracy	एक सच्चे लोकतंत्र की कार्यप्रणाली हेतु सूचना का अधिकार अपरिहार्य है
May be sent to IFD for financial	वित्तीय अनुमोदन के आंतरिक वित्त प्रभाग को भेजा जाए
The department will provide financial assistance	विभाग द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी
80% of the expenditure will be borne by the office concerned	व्यय का 80% संबंधित कार्यालयों द्वारा वहन किया जाएगा
The details of the expenditure are given in the noting of pre page	व्यय का विवरण पूर्व पृष्ठ की नोटिंग में दिया गया है



हिन्दी पखवाड़ा के कार्यक्रम

मॉयल लिमिटेड, में 14 सितम्बर से 29 सितम्बर तक हिन्दी पखवाड़ा हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पखवाड़ा का शुभारंभ भारत मंडपम, नई दिल्ली में गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में मॉयल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सहभागिता की।

इसी संदर्भ में 16 सितम्बर से कार्यालय में विभिन्न प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जैसे हिन्दी वर्ग पहेली, पंच लाइन, निबंध, स्लोगन, प्रश्नोत्तरी, नोटिंग ड्राफ्टिंग एवं एकाक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया एवं दिनांक 24.09.2024 को 'देवनागरी लिपि का मानकीकरण' विषय पर एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। पखवाड़े के समापन पर काव्य गोष्ठी आयोजित की गई।



साथ ही मॉयल के निकट स्थित तिड़के विद्यालय में निबंध प्रतियोगिता एवं रानु हाई स्कूल में पोस्टर प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।





दिनांक 30.09.2024 को मॉयल भवन स्थित 'आडोटोरियम' में पुरस्कार वितरण एवं हिन्दी पखवाड़ा के समापन समारोह का आयोजन किया गया। समापन समारोह कार्यक्रम में हिन्दी पखवाड़ा के दौरान कार्यालय एवं स्कूल में आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। साथ ही 'क' एवं 'ख' क्षेत्र के सर्वाधिक हिंदी पत्राचार करने वाले कार्यालयों को भी पुरस्कृत किया गया।



खान स्तर पर हिंदी के प्रसार-प्रचार हेतु आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएं एवं कार्यक्रम



दिनांक 19.06.2024 को चिखला खान में मंचीय नाटक का आयोजन किया गया।



दिनांक 28.06.2024 को गुमगांव खान में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया।



दिनांक 11.07.2024 को गुमगांव खान में पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।



दिनांक 20.07.2024 को तिरोड़ी खान में कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।



दिनांक 28.07.2024 को बालाघाट खान में मंचीय नाटक का आयोजन किया गया।



दिनांक 24.10.2024 को चिखला खान में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

खान स्तर पर हिंदी के प्रसार-प्रचार हेतु आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएं एवं कार्यक्रम



दिनांक 02.08.2024 को तिरोडी खान में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया।



दिनांक 24.10.2024 को चिखला खान में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।



दिनांक 25.11.2024 को गुमगांव खान में मंचीय नाटक का आयोजन किया गया।



दिनांक 30.11.2024 को चिखला खान में संगोष्ठी का आयोजन किया गया।



दिनांक 26.11.2024 को डोंगरी बुजुर्ग खान में जि. प. हाईस्कूल में कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।



दिनांक 24.12.2024 को मनसर खान में वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

खान स्तर पर हिंदी के प्रसार-प्रचार हेतु आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएं एवं कार्यक्रम



दिनांक 29.10.2024 को मनसर खान में मंचिय नाटक का आयोजन किया गया।

दिनांक 05.08.2024 को डोंगरी बुजुर्ग खान में
मंचीय नाटक का आयोजन किया गया।

दिनांक 28.08.2024 को कान्द्री खान में काव्य
गोष्ठी का आयोजन किया गया।

दिनांक 30.08.2024 को बेलडोंगरी खान में वाद-
विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

तिमाही कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 24.09.2024. का राजभाषा से संबंधित नियम पर कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें मॉयल मुख्यालय, नागपुर के विभिन्न विभागों में कार्यरत कर्मचारी उपस्थित थे। दिनांक 07.12.2024 को राजभाषा से संबंधित नियम पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।



उपरोक्त कार्यशाला में "देवनागरी लिपि का मानकीकरण" विषय पर उपस्थित सभी कर्मचारियों को महत्वपूर्ण एवं सारगर्भित जानकारी प्रदान की गई। कार्यशाला में वक्ता द्वारा बताया गया कि राजभाषा हिंदी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। हिंदी जैसी बोली जाती है वैसे ही लिखी जाती है। हिंदी में बहुत से शब्द ऐसे हैं जिन्हें लिखने में दुविधा उत्पन्न होती है कि सही शब्द कौन सा है, इस समस्या के समाधान हेतु देवनागरी लिपि का मानकीकरण किया गया है। इससे हमें देवनागरी लिपि में सही शब्दों का सही उपयोग करना आसान हुआ है।



कार्यक्रम में मॉयल मुख्यालय के विभिन्न विभागों के कुल 64 कर्मचारियों ने सम्मिलित होकर 'देवनागरी लिपि का मानकीकरण' विषय पर महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की। सभी उपस्थित कर्मचारियों ने भविष्य में कार्यालयीन कार्य में मानक को ध्यान में रख कर कार्य करने का निर्णय किया।

हिंदी मासिक प्रतियोगिता

राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक मॉयल लिमिटेड मुख्यालय नागपुर में हिंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। इस तारतम्य में जुलाई 2024 से दिसम्बर 2024 के मध्य विभिन्न प्रतियोगिता का



दिनांक 29.07.2024 को हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
दिनांक 17.10.2024 को शुद्धलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।



दिनांक 25.11.2024 को वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिती, कार्यालय-1 के तत्त्वधान में हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 23.07.2024, दिन मंगलवार को मॉयल लिमिटेड में, नराकास कार्यालय -1 के तत्वाधान में हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न कार्यालय के सदस्यो ने भाग लिया।



दिनांक 22.01.2025 को मौखिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

नराकास (का-1) के सदस्य कार्यालयों के कर्मचारियों ने हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में सम्मिलित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया।



दिनांक 10.01.2025 को गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

पूजा का सही तरीका

जब मैं अपने दीक्षा गुरु उपेंद्र जी महाराज से पहली बार मिला तो मुझे वे एक साधारण से किसान और कानपुर के किसी गाँव के निवासी से अधिक नहीं लगे। मन लगातार यह सोचता यह वही व्यक्ति हैं, जिनके बारे में विश्व भर रामायण सम्मेलन कराने वाले स्व. लल्लन प्रसाद व्यास जी इतना ज्यादा बताते हैं, और उनके प्रति इतना सम्मान का भाव रखते हैं। क्या ये वही व्यक्ति हैं जिनके चरणों में तमाम ताकतवर व्यक्ति अपना शीश झुकाते हैं। लेकिन जैसे जैसे उनके करीब आता गया, उनका व्यक्तित्व मुझ पर हावी होता चला गया। एक दिन वह भी आया जब मैं और मेरा छोटा भाई उनके सबसे प्रिय शिष्य बन गए। उनके संपूर्ण व्यक्तित्व के बारे में मेरी एक पुस्तक- “मेरे दीक्षा गुरु” पहले ही प्रकाशित हो चुकी है। यहाँ मैं उनके सानिध्य में रहने के दौरान हुई कुछ विशेष घटनाओं या प्रसंगों का ही उल्लेख करूंगा।

कानपुर देहात के हमीरपुर-बाँदा रोड पर स्थित खड़ेसर गाँव में माँ गायत्री का सिद्ध मंदिर है जिसे मेरे गुरुदेव ने ही निर्मित कराया। आज हम शिष्य लोग इस आश्रम को खड़ेसर धाम कहते हैं। वर्ष 2000 से 2018 तक हमने लगातार इस आश्रम में निरंतर पूजा पाठ किया। चैत्र नवरात्र के नौ दिन, शारदीय नवरात्र के नौ दिन, बसंत पंचमी पर चार दिन और गुरु पूर्णिमा का एक दिन तो अवश्य आश्रम में व्यतीत होता। इनमें दिल्ली से आने-जाने के दो-दो दिन और जोड़ लीजिए तो मेरे कार्यालय की वर्ष में मिलने वाली तीस अर्जित छुट्टियाँ 15-20 वर्षों तक आश्रम के लिए ही रिज़र्व रहीं। नवरात्रों को दौरान हम नौ दिन की अखंड जप साधना में लीन रहते। अब तो स्थिति बेहतर हो गई है लेकिन वर्ष 2000 से 2010 के आसपास तक तो मोबाइल फोन के सिगनल ही नहीं आते थे। सिगनल किसी तरह आ भी जाए तो मोबाइल ज्यादा देर नहीं चलता था क्योंकि बीस-बीस घंटे लाइट ही नहीं आती थी, चार्ज कहाँ से करते। फोन लगाने के लिए काफी दूर तक जाना पड़ता था। मेरे पास तो उस समय अर्थात् वर्ष 2000 के आसपास मोबाइल भी नहीं था। कोई रेडियो या टीवी नहीं था, इसलिए पूरी दुनिया से जैसे कट जाते थे।

लेकिन दुनिया से यह अलगाव साधना की दृष्टि से बहुत उत्तम होता। महाराज जी (हम अपने गुरुदेव को इसी नाम से संबोधित करते थे) के सानिध्य में अधिक-से-अधिक रहने का मौका मिलता। वैसे भी नवरात्र के दौरान वे आश्रम के बाहर के किसी व्यक्ति से नहीं मिलते थे लेकिन वहाँ साधना कर रहे अपने शिष्यों के लिए हमेशा उपलब्ध रहते थे। ऐसे में बहुत बार उनके श्रीमुख से ऐसे ऐसे अमृत वचन निकलते थे जो आज भी हृदय पटल पर अंकित हैं। एक दिन महाराज जी ने कहा- जब भी मंदिर में पूजा करने के लिए



प्रवेश करो तो अपनी चप्पलों के साथ सारी दुनिया भी बाहर छोड़ जाओ। अंदर तुम्हारे और तुम्हारे ईष्ट के बीच और कोई न हो। केवल अपने ईष्ट का ध्यान हो, केवल उसका मंत्र हो और केवल उससे संपर्क जुड़े। लेकिन होता यह है कि लोग जब भी मंदिर में जाकर बैठते हैं तो पूजा या मंत्र को छोड़कर सब कुछ करते हैं। उन्हें वहीं घर की सारी समस्याएँ याद आती हैं, दफ्तर के काम याद आते हैं और क्या करना है, क्या नहीं करना है- इस तरह की सारी बातें मन में घूमती हैं। आप बैठे तो ईश्वर के सामने होते हैं लेकिन आपका मन दुनिया में भटक रहा होता है। यह पूजा नहीं, मात्र दिखावा है। आपके और उसके बीच कोई संपर्क तो हुआ ही नहीं। वह अपनी दुनिया में है और आप अपनी दुनिया में। बस एक दूसरे के सामने बैठे हैं। याद रखो, जब भी अपने ईष्ट के सामने हों तो तुम्हारे और उसके बीच कोई और न आने पाए। यही सच्ची पूजा है, यहीं से पूजा और ध्यान का आरंभ होता है। बाकी सब आडम्बर है।

एक बार मैंने उनसे पूछा कि अक्सर गायत्री मंत्र के बारे में लोग कहते हैं कि इसे बोलकर नहीं पढ़ना चाहिए। इसका क्या तात्पर्य है? इसके अलावा यदि उच्चारण में छोटी-मोटी कोई भूल हो जाए तो क्या उसका कोई दुष्परिणाम निकलेगा? इस पर उन्होंने कहा कि बोलकर पढ़ना कोई अपराध तो नहीं है लेकिन जैसे होम्योपैथी में हर दवा की एक पोटेंसी (सामर्थ्य या शक्ति) होती है और उसी के हिसाब से वह रोगी को दी जाती है, उसी तरह मंत्र शक्ति और ऊर्जा से भरे होते हैं। उनकी भी एक पोटेंसी होती है जो उनके उच्चारण के प्रकार से कम या अधिक होती है। उन्होंने बताया कि पूजन का सबसे साधारण प्रकार चिल्लाकर, बोलकर या गाकर भक्ति करना होता है। संगीत से जरूर हमारा मन पूजा की ओर केंद्रित होता है लेकिन यह बाह्य प्रकार की भक्ति है। जैसे जैसे आप भीतर जाएंगे,

मंत्र की ऊर्जा बढ़ती है। मंत्र को बोलकर जपना प्रारंभिक स्थिति है। इसके बाद की स्थिति को उपांशु कहा जाता है जहाँ मंत्र बोला तो नहीं जाता लेकिन उसके उच्चारण में होंठ और जीभ दोनों चलते हैं। इससे मंत्र की शक्ति और बढ़ जाती है लेकिन जब मानसिक जप किया जाता है तो उसका सर्वाधिक लाभ होता है क्योंकि तब आप सीधे अपने आप से, अपने इष्ट से जुड़ते हैं। मन भाग नहीं पाता, उसे एकाग्र होना पड़ता है जबकि अन्य दोनों स्थितियों में मुख मंत्र बोलता रहता है और मन कहीं और होता है। अब रही बात गायत्री मंत्र में उच्चारण संबंधी छोटे-मोटे दोष की तो अगर किसी उच्चारण से एकदम अर्थ का अनर्थ ही न हो जाए तब तक कोई नुकसान जैसी स्थिति नहीं होती। उन्होंने कहा कि गायत्री साधना एक अमृत कुंडकी की तरह है। चाहे अपने आप इसमें कूदो या कोई धक्का देकर इसमें गिरा दे अथवा अचानक इसमें गिर पड़ो, मुँह में जाएगा अमृत ही। इसलिए हर क्षण, हर पल माँ गायत्री को जपो। इसीलिए तो उसे महामंत्र कहा गया है। उनकी बात कितनी सटीक थी, यह बात हम आज अपने पूरे परिवार में अनुभव कर रहे हैं। जबसे माँ गायत्री के गहन पूजन में जुटे हैं, सर्वत्र माँ का अमृत बरस रहा है। साधना की एक विशेष अवस्था से गुजर जाने के बाद महाराज जी ने कृपा कर हम कुछ शिष्यों को कुछ बीज मंत्र प्रदान किए जिनका जप हम आज भी मूल मंत्र के साथ करते हैं। इन बीज मंत्रों के बाद तो यह महामंत्र और भी शक्तिशाली बन जाता है।

लोग अक्सर शुभ और अशुभ मुहूर्त की चर्चा करते हैं। मैं तो ज्योतिषाचार्य हूँ, इसलिए प्रायः मुहूर्त की चर्चा होती ही रहती है। एक दिन मैंने उनसे इस बारे में पूछा तो उन्होंने कहा- ज्योतिष तुम जानो, हम तो बस इतना जानते हैं कि शुभ कार्य के लिए कोई अशुभ मुहूर्त नहीं होता और अशुभ कार्य के लिए कोई मुहूर्त निकालने की ज़रूरत नहीं होती। तुम तो पूजा पाठ करते हो, ईश्वर की पूजा के लिए सारे मुहूर्त शुभ होते हैं बल्कि जिन स्थितियों को अशुभ कहा जाता है जैसे कि ग्रहण पड़ना, उन स्थितियों में भी पूजन करना शुभ होता है। मानसिक पूजन तो हमेशा सर्वश्रेष्ठ होता है। माला करने के लिए सौ कायदे कानून हैं लेकिन मानसिक जप कभी भी किसी भी स्थिति में किया जा सकता है। इसी अवसर पर उन्होंने एक और बहुत बड़ी बात कही थी। उन्होंने हाथों को भिक्षा माँगने वाली मुद्रा में फैलाते हुए कहा कि ईश्वर से कामना करो कि वह कभी ऐसी स्थिति में न लाए बल्कि हमेशा ऐसी स्थिति में रखे जहाँ तुम्हारा हाथ किसी की मदद करता रहे। उनकी बात सुनकर यकायक कबीर की ये पंक्तियाँ मेरे मन में गूँज गईं-

साई इतना दीजिए जामे कुटुम्ब समाए

मैं भी भूखा न रहूँ, न साधु भूखा जाए।

ऐसे ही एक दिन चर्चा के दौरान उन्होंने हम दोनों भाइयों से एकांत में बहुत बड़ी बात कही। वे बोले- देखो, लोग हमारे पास तमाम दुःख, कष्ट और परेशानियों को लेकर आते हैं, उनकी चर्चा करते हैं, उन्हें दूर करने के लिए हमारे पाँव छूते हैं। तुम दोनों भाई ऐसा कभी मत करना। जीवन है तो कष्ट भी होंगे, दुःख और दर्द भी होंगे, जो

कुछ कर्म तुम पूर्वजन्म में कर आए हो, उसके हिसाब से फल भी भोगना होता है। अच्छे फल तुम्हारी खुशियों और बुरे फल तुम्हारे रोगों और कष्टों के रूप में आते हैं। तुम हमसे कभी इन्हें दूर करने के लिए मत कहना क्योंकि विधाता के विधान को हम भी समाप्त नहीं कर सकते। हम कुछ कर सकते हैं तो बस इतना कि तुम्हारे कष्टों को कुछ दिन के लिए टाल सकते हैं, समाप्त नहीं कर सकते। वह तो विधाता ही कर सकता है। अपने कष्ट बाद में तो भोगने ही पड़ेगे, इसलिए हमारे सामने भोग लो ताकि हमारी निगाह में रहो और हम उन्हें भोगने में तुम्हारी मदद भी कर सकें। इसके बाद कोई गलत कर्म मत करना ताकि कोई अन्य कष्ट भोगने की स्थिति न आए। ये भी कभी मत सोचना कि अगले जन्म में ये होगा, वो होगा। जो कुछ होगा, इसी जन्म में करो। इसे ही आखिरी जन्म मान कर करो ताकि जब इस दुनिया में मिला समय समाप्त हो तो सीधे ईश्वर के चरणों में स्थान मिले। अगले जन्म में पता नहीं हम कहाँ होंगे और तुम कहाँ। कभी कभी ऐसा भी होता है जैसा रेलवे स्टेशन पर होता है। गुरु रेलगाड़ी में खड़ा है तुम्हें अपने साथ ले जाने के लिए, वह हाथ दे रहा है। तुम प्लेटफार्म पर हो लेकिन गाड़ी स्पीड पकड़ लेती है और तुम न तो रेल पर चढ़ पाते हो, न ही गुरु का हाथ पकड़ पाते हो। इसलिए जो कुछ करना है, हमारे सामने कर लो।

कितना सच कहा था उन्होंने। उनके रहते लगभग 15-16 वर्षों तक हमने साल में तीस-तीस दिन आश्रम में रहकर गहन साधना की, उनसे बीज मंत्र प्राप्त किए और पूजा के तमाम तौर-तरीके सीखे लेकिन उनके इस असार संसार से चले जाने के बाद बहुत गहराई से अनुभव होता है कि दुनिया उतनी ही रह गई, जहाँ तक उनके साथ थी, उससे आगे बढ़ी ही नहीं। अपनी तरफ से उनके बताए तरीकों से पूजा-पाठ करते हैं, नियमित रूप से करते हैं लेकिन किसी भी असहज करने वाली स्थिति में गुरु की छत्रछाया और मार्गदर्शन आज उपलब्ध नहीं है। कभी-कभी उनकी कमी बहुत ज्यादा खलती है। जब हर तरफ से निराश हो जाते थे या किसी स्थिति में असमंजस में फँस जाते थे तो महाराज जी को याद करते थे और फोन पर ही उनका दुलार बरस जाता था। हमारी समस्याओं की जिम्मेदारी वे स्वयं ले लेते थे और एक ही वाक्य बार-बार कहते थे- मरत रहो। सचमुच उनके रहते हम बहुत मरत रहे। उनकी कृपा से मरत तो आज भी हैं लेकिन उनका सानिध्य नहीं है। उनकी साक्षात् उपस्थिति नहीं है। बस स्मृतियाँ हैं, उनके चित्र हैं और उनके द्वारा दिए गए मंत्र और निर्देश हैं। यही स्थिति माता-पिता की भी है। उनके रहते ही सब कुछ कर लीजिए, उनका सारा प्यार और दुलार पा लीजिए। उनके सारे अनुभवों को संजो लीजिए- बाद में कुछ नहीं बचता। बाद में स्मृतियों के रूप में रह जाते हैं कुछ चित्र, उनके बातें और आँसू। मेरे पिता और मेरे गुरुदेव आज स्मृतियों में ही शेष हैं।

राजेश श्रीवास्तव
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय

अंतर्राष्ट्रीय क्वालिटी सर्कल सम्मेलन कोलंबो श्रीलंका में माँयल लिमिटेड का उत्कृष्ट प्रदर्शन।



अंतर्राष्ट्रीय क्वालिटी सर्कल सम्मेलन 2024 का आयोजन 11 नवम्बर से 14 नवम्बर तक कोलंबो श्रीलंका में आयोजित किया गया था। जिसमें विश्व के 14 देशों ने भाग लिया, जिसमें माँयल लिमिटेड नागपुर भारत की दो टीमों शामिल हुई थीं। अविधन क्वालिटी सर्कल टीम, फेरो प्लांट बालाघाट खान एवं परख क्वालिटी सर्कल टीम, तिरोड़ी खान ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए प्रतिष्ठित गोल्ड अवार्ड जीता। अविधन क्वालिटी सर्कल टीम, एफएमपी, बालाघाट खान की ओर से मनोहर मसाले फैसिलिटेटर, नरेश सिंह सोमवंशी लीडर, मनोज उमाले डिप्टी लीडर, वाय. डी. एस. राव मेंबर, महेश बोपचे मेंबर तथा परख क्वालिटी सर्कल टीम, तिरोड़ी खान से संजीव पंडा डिप्टी फैसिलिटेटर, दिनेश कनोजे लीडर, राजू केरकेट्टा डिप्टी लीडर, अखिलेश कुमार मेंबर, हुबलाल जेटूमल मेंबर एवं तीरथ वर्मा मेंबर शामिल थे।



मॉयल की फेरो प्लांट, बालाघाट खान को मिला प्रथम स्थान !!!



38 वे नेशनल कन्वेंशन ऑन क्वालिटी कॉन्सेप्ट्स, ग्वालियर चैप्टर द्वारा आयोजित (एनसीक्यूसी 2024) जो की 27 से 30 दिसंबर 2024 को ग्वालियर में आयोजित किया गया था। उसमे प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी मॉयल एफएमपी बालाघाट खान की अविघ्न क्वालिटी सर्किल ने पुनः उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए सर्वोच्च पार एक्सीलेंस अवॉर्ड प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में संपूर्ण भारत की विभिन्न कंपनियों की 2200 टीमों ने भाग लिया था, जिसमे 12000 से ज्यादा प्रतिभागी थे। मॉयल की दो टीमों ने भाग लिया था जिस मे मॉयल की टीमों में से

अविघ्न क्यूसी टीम को सर्वोच्च पार-एक्सीलेंस अवार्ड प्राप्त हुआ हैं। टीम की इस सफलता पर संरक्षक श्री आर यू सिंह खान प्रबंधक श्री मयंक जैन एवम कोऑर्डिनेटर श्री मनोहर महाले ने टीम के फेसिलिटेटर श्री नरेशसिंह सोमवंशी, लीडर श्री मनोज उमाले, डिप्टी लीडर श्री महेश बोपचे एवम सदस्य श्री वाई बी एस राव को टीम की सफलता के लिए बधाई दी। टीम की इस सफलता पर निर्देशक मानव संसाधन श्रीमती उषा सिंह ने भी बधाई दी।



खेल का महत्व

खेल हमारे जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। खेल का महत्व निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है:-

1. शारीरिक स्वास्थ्य के लिए

खेल खेलने से शरीर स्वस्थ रहता है। यह मांसपेशियों को मजबूत बनाता है। शरीर को सक्रिय रखता है और विभिन्न बीमारियों से बचाव करता है। खेलों के माध्यम से हम सहनशक्ति, गति, और लचीलापन विकसित कर सकते हैं।

2. मानसिक विकास में सहायक

खेल तनाव और मानसिक थकान को कम करने में मदद करते हैं। यह एकाग्रता, धैर्य और आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं। इसके साथ ही, हार-जीत के अनुभव से व्यक्ति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना सीखता है।

3. सामाजिक समन्वय का विकास

टीम खेल जैसे क्रिकेट, फुटबॉल, वॉलीबॉल और कबड्डी आपसी सहयोग, अनुशासन और सामूहिकता सिखाते हैं। ये खेल लोगों को एकजुट रहने और सामूहिक सफलता के लिए प्रयास करने की प्रेरणा देते हैं।

4. चरित्र निर्माण में योगदान

खेल अनुशासन, ईमानदारी, और कड़ी मेहनत की आदत डालते हैं। यह साहस, संयम और नैतिक मूल्यों को विकसित करने में मदद करते हैं।



5. पेशेवर संभावनाएँ

खेल आज के समय में करियर बनाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन चुके हैं। अच्छे खिलाड़ी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाते हैं और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनते हैं।

6. मनोरंजन और ऊर्जा का स्रोत

खेल मनोरंजन का बेहतरीन माध्यम है। यह जीवन की दिनचर्या में नई ऊर्जा भरने और समय को सार्थक रूप से व्यतीत करने का साधन है। खेल जीवन के हर पहलू में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह न केवल व्यक्तिगत विकास करता है, बल्कि समाज और राष्ट्र को भी मजबूत बनाता है। इसलिए हमें खेलों को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए और इसे बढ़ावा देना चाहिए।

* संदीप देवांगन
सहा. सह. टंकक



सुकून की छांव

सुकून की छांव एक ऐसी अनुभूति है, जो जीवन के आपाधापी और भागदौड़ भरे पलों के बीच हमें शांति और आत्मीयता का एहसास कराती है। यह वह क्षण होता है जब मन के सारे बोझ हल्के हो जाते हैं, और आत्मा किसी ठंडी छांव में विश्राम करती है। जीवन में हर कोई सुकून की तलाश करता है। कभी यह प्रकृति की गोद में मिलता है, तो कभी किसी अपने के साथ बिताए गए पलों में। कभी यह एकांत में एक किताब के पन्नों में छुपा होता है तो कभी किसी प्याले चाय के संग बहती हुई यादों में।

सुकून का महत्व

सुकून सिर्फ मन की शांति नहीं है बल्कि यह हमारी ऊर्जा को पुनः जागृत करने का साधन भी है। भागदौड़ भरी जिंदगी में थमने और अपने भीतर झांकने का समय शायद ही मिल पाता है। ऐसे में सुकून हमें खुद को समझने का मौका देता है। यह हमें सिखाता है कि कभी-कभी ठहरना, सोचना और जीवन के छोटे-छोटे पलों का आनंद लेना कितना महत्वपूर्ण है।

सुकून कहां मिलेगा

सुकून पाने के लिए हमें बाहर की दुनिया में भटकने की आवश्यकता नहीं होती। यह हमारे भीतर ही होता है। इसे पाने के लिए हमें बस अपनी प्राथमिकताओं को समझना अपने समय का सही प्रबंधन करना और खुद को स्वीकार करना सीखना होगा। प्रकृति की गोद में किसी हरियाली भरे स्थान पर जाकर बैठना, पक्षियों की चहचहाहट

सुनना और बहती हुई हवा का एहसास करना मन को गहरी शांति देता है।

अपनों के साथ समय बिताना

परिवार और दोस्तों के साथ बिताए गए पल हमें खुशियों और सुकून से भर देते हैं।

सृजनात्मकता में लीन होना

कला, लेखन, संगीत, या किसी भी सृजनात्मक कार्य में लगकर हम अपने भीतर की ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में मोड़ सकते हैं।

सुकून की छांव का अनुभव

यह अनुभव वैसा ही है, जैसे किसी तपती दोपहर में अचानक से घने वृक्ष की छांव मिल जाए। सुकून की यह छांव हमें एहसास दिलाती है कि जीवन सिर्फ भागदौड़ का नाम नहीं, बल्कि इसमें ठहराव भी उतना ही महत्वपूर्ण है। सुकून की छांव में बैठकर हम अपने आप से मिलते हैं। यह हमें प्रेरणा देती है कि हर हालात में अपने भीतर एक शांति का कोना बनाए रखें। यही वह छांव है, जो हमें हर परिस्थिति में सकारात्मक और ऊर्जावान बनाए रखती है। सुकून की तलाश न करें, उसे अपने भीतर जगाएं, क्योंकि सुकून पाने के लिए बाहर नहीं, भीतर झांकने की जरूरत होती है।

* मो. अफरोज अख्तर
सहा. सह टंकक



सब्र का फल मीठा

“सब्र का फल मीठा होता है” यह कहावत हमें जीवन में धैर्य और संयम का महत्व समझाती है। यह कहावत सिखाती है कि कठिन परिस्थितियों में यदि हम धैर्यपूर्वक और सकारात्मक सोच के साथ प्रतीक्षा करें, तो हमें सफलता अवश्य मिलती है। धैर्य का मूल्य केवल सफलता प्राप्त करने में नहीं बल्कि जीवन को सही दृष्टिकोण से जीने में भी है।

सब्र का महत्व

जीवन में हर कार्य का समय और प्रक्रिया होती है। यदि हम अधीर होकर उसे जल्दी हासिल करने की कोशिश करें, तो यह संभव है कि परिणाम हमारी अपेक्षा के विपरीत हो। सब्र रखने वाले व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी शांत रहते हैं, जो उन्हें सही निर्णय लेने में मदद करता है। यह धैर्य ही है जो हमें बड़ी से बड़ी चुनौतियों का सामना करने का साहस देता है।

सब्र का फल कैसे मीठा होता है

धैर्य और संयम से किया गया कार्य लंबे समय में बेहतर परिणाम देता है। उदाहरण के लिए, किसान जब बीज बोता है, तो उसे उगने में समय लगता है। वह अपनी मेहनत और धैर्य के साथ फसल की देखभाल करता है। अंततः, जब फसल पकती है, तो वह उसका मीठा फल पाता है। इसी प्रकार विद्यार्थी जीवन में भी पढ़ाई और

मेहनत के बाद सफलता प्राप्त होती है। यदि कोई विद्यार्थी बिना धैर्य के जल्दबाजी करे, तो उसकी तैयारी अधूरी रह सकती है, जो असफलता का कारण बनती है।

धैर्य और सफलता का रिश्ता महान व्यक्तियों का जीवन इस बात का उदाहरण है कि धैर्य और मेहनत से सब कुछ संभव है। महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा का मार्ग अपनाते हुए वर्षों तक संघर्ष किया, और अंत में भारत को स्वतंत्रता मिली। धैर्यवान व्यक्ति हमेशा खुश रहते हैं, क्योंकि उन्हें पता होता है कि हर कठिनाई के बाद एक बेहतर अवसर आता है।

“सब्र का फल मीठा” केवल एक कहावत नहीं, बल्कि जीवन का एक महत्वपूर्ण सत्य है। जीवन में हर चीज़ का समय निर्धारित होता है। यदि हम धैर्य के साथ प्रतीक्षा करना सीख लें, तो हमें न केवल सफलता मिलेगी, बल्कि मन की शांति भी। इसलिए, जीवन में हर परिस्थिति में धैर्य बनाए रखें और आगे बढ़ें। धैर्य रखिए, विश्वास कीजिए, और देखिए कि कैसे समय आपको आपकी मेहनत का मीठा फल देता है।

✧ सुखराम ब्रम्हे

भंडार सह सामग्री सहायक



सफलता की कुंजी

सफलता हर व्यक्ति का सपना होती है। यह एक ऐसी अवस्था है जिसे पाने के लिए लोग अपने जीवन में कठिन परिश्रम करते हैं और कई बलिदान देते हैं। सफलता प्राप्त करना आसान नहीं है, लेकिन यह असंभव भी नहीं है। इसके लिए अनुशासन, मेहनत, और सही दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। आइए जानें सफलता की कुंजी के कुछ महत्वपूर्ण पहलू।

1. सपने देखना और लक्ष्य तय करना

सफलता की पहली कुंजी है स्पष्ट लक्ष्य। जब तक आप यह नहीं जानते कि आप क्या हासिल करना चाहते हैं, तब तक सही दिशा में प्रयास करना मुश्किल है।

- * अपने जीवन के लिए एक बड़ा सपना देखें।
- * उसे छोटे-छोटे लक्ष्यों में विभाजित करें।
- * लिखित रूप में अपने लक्ष्यों को तय करें और उन पर ध्यान केंद्रित करें।

2. कठिन परिश्रम और दृढ़ संकल्प

सपनों को हकीकत में बदलने के लिए मेहनत और समर्पण जरूरी है।

- * मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता।
- * हर दिन अपने लक्ष्य की ओर छोटे-छोटे कदम बढ़ाएं।
- * कठिन समय में धैर्य और आत्मविश्वास बनाए रखें।

3. सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास

सफलता पाने के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण होना जरूरी है।

- * हमेशा अपनी क्षमताओं पर भरोसा रखें।
- * समस्याओं को अवसर के रूप में देखें।
- * गलतियों से सीखें और आगे बढ़ें।

4. समय का सही उपयोग

समय सबसे मूल्यवान संसाधन है। इसे व्यर्थ न जाने दें।

- * अपनी दिनचर्या में अनुशासन रखें।
- * महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता दें।
- * समय बर्बाद करने वाली आदतों से बचें।

5. लगातार सीखने की इच्छा ज्ञान और कौशल

सफलता का आधार होते हैं।

- * नई चीजें सीखने के लिए हमेशा तैयार रहें।
- * पुस्तकों, सेमिनारों और विशेषज्ञों से ज्ञान प्राप्त करें।
- * अपनी कमियों को पहचानें और उन्हें सुधारें।

6. संगति और प्रेरणा

सफलता की ओर बढ़ने के लिए अच्छे लोगों का साथ होना जरूरी है।

- * सकारात्मक और प्रेरणादायक लोगों के साथ समय बिताएं।
- * अपने आदर्शों से प्रेरणा लें।
- * नकारात्मक सोच रखने वालों से दूरी बनाए रखें।

7. स्वास्थ्य और संतुलन

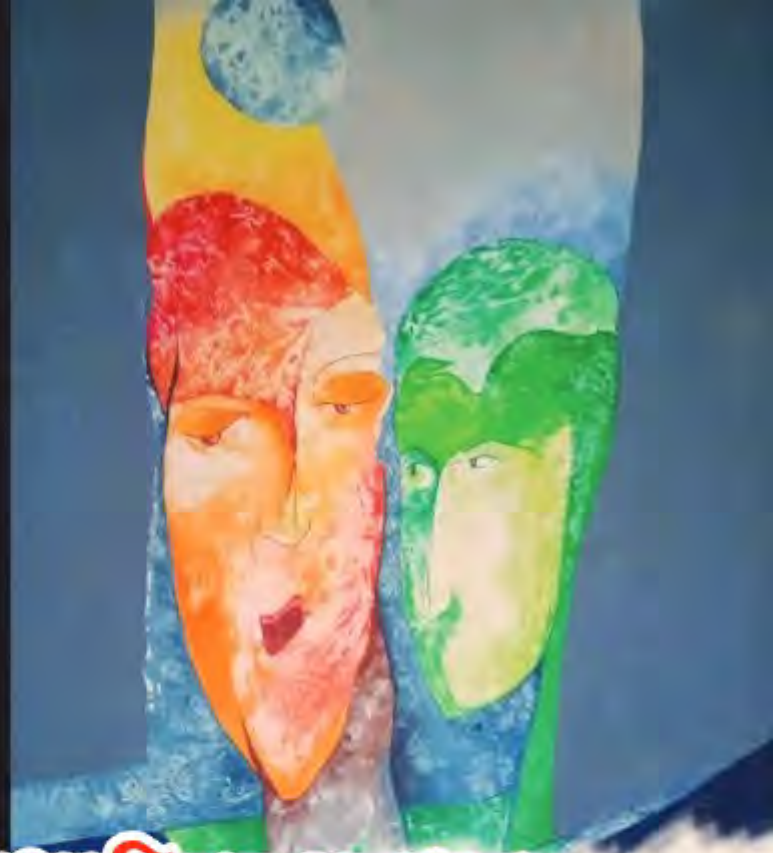
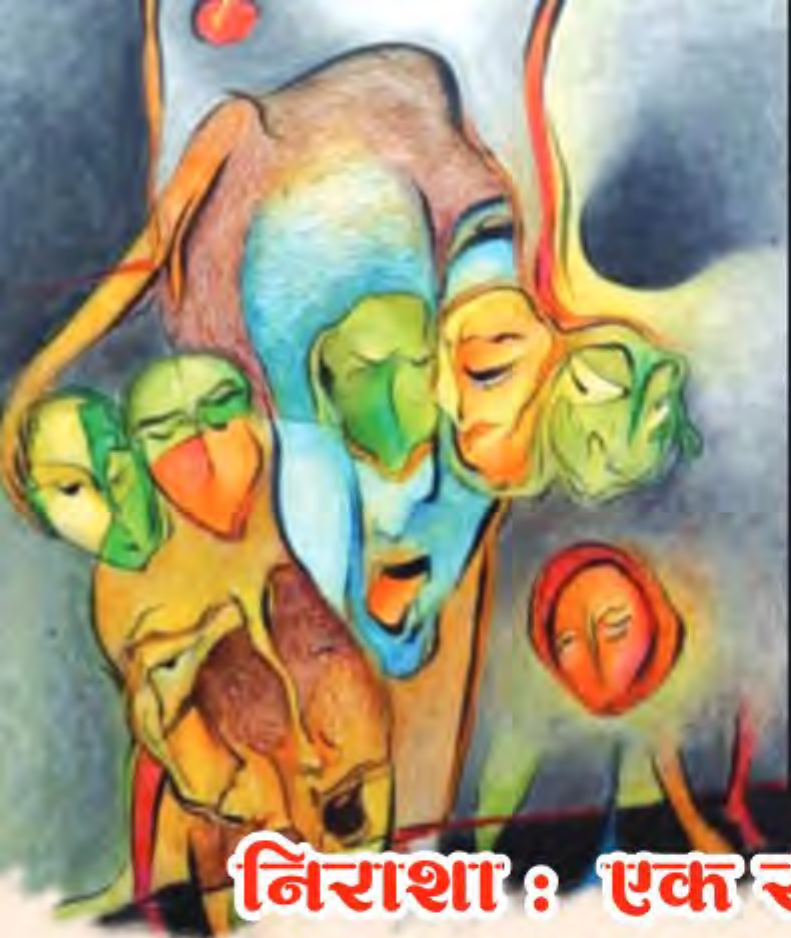
शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य सफलता के लिए अनिवार्य हैं।

- * नियमित व्यायाम करें और सही आहार लें।
- * तनाव को प्रबंधित करें और पर्याप्त नींद लें।
- * काम और जीवन के बीच संतुलन बनाए रखें।

सफलता का मार्ग आसान नहीं है, लेकिन अगर सही दिशा में मेहनत की जाए, तो इसे हासिल किया जा सकता है।

यह कोई जादू नहीं बल्कि हमारी सोच, आदतें और प्रयासों का परिणाम है। इसलिए अपने लक्ष्यों पर विश्वास करें, मेहनत करें, और सफलता की ओर बढ़ते रहें। सफलता उन्हीं को मिलती है जो इसे पाने की पूरी कोशिश करते हैं।

* नीता गुजर
सहा. सह टंकक



निराशा : एक स्वाभाविक अनुभव

जीवन में उतार-चढ़ाव आना स्वाभाविक है। जब चीज़ें हमारे अनुसार नहीं होतीं, तो निराशा का अनुभव होना सामान्य है। यह एक मानवीय भावना है, जो हमारे भीतर छिपी असुरक्षा, असफलता या असंतोष से उत्पन्न होती है। लेकिन सवाल यह है कि क्या निराशा होकर रुक जाना चाहिए, या इसे एक प्रेरणा के रूप में देखना चाहिए

निराशा के कारण

निराशा के पीछे कई कारण हो सकते हैं :

1. **असफलता का सामना :** जब हमारे प्रयासों का परिणाम अपेक्षा से भिन्न होता है।
2. **उच्च अपेक्षाएँ:** खुद से या दूसरों से अत्यधिक उम्मीदें लगाना।
3. **अज्ञात भविष्य का डर :** यह सोचकर परेशान होना कि आगे क्या होगा।
4. **समाज का दबाव :** दूसरों से तुलना करना और उनके मानकों पर खरा न उतर पाना।

निराशा के प्रभाव

निराशा व्यक्ति की मानसिक स्थिति, शारीरिक स्वास्थ्य और रिश्तों पर प्रभाव डाल सकती है। यह आत्मविश्वास को कम कर सकती है और उदासी, चिंता या अवसाद का कारण बन सकती है।

क्या निराशा में रहना सही है

निराशा को अनुभव करना बुरा नहीं है, लेकिन उसमें फंसे रहना हमारी प्रगति में बाधा बन सकता है। निराशा को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखना महत्वपूर्ण है:

1. एक अवसर के रूप में देखें निराशा हमें यह सिखाती है कि कहाँ सुधार की आवश्यकता है।
2. अनुभव से सीखें हर असफलता एक नई सीख लाती है, जो भविष्य में सफलता का आधार बन सकती है।
3. ध्यान केंद्रित रखें: अपनी ऊर्जा को समस्याओं की बजाय उनके समाधान पर लगाएँ।

निराशा से बाहर निकलने के उपाय

1. **आत्ममूल्यांकन करें:** यह समझें कि आप क्यों निराश हैं और उस कारण का समाधान खोजें।
2. **सकारात्मक सोचें** अपने आसपास प्रेरणादायक कहानियों या व्यक्तियों से प्रेरणा लें।
3. **छोटे कदम उठाएँ :** बड़ी समस्याओं को छोटे हिस्सों में बाँटकर समाधान खोजें।
4. **मदद लें :** अगर स्थिति नियंत्रण से बाहर है, तो परिवार, मित्रों, या पेशेवर मदद का सहारा लें।

निराशा एक अस्थायी भावना है। यह हमें हमारी कमजोरियों को पहचानने और सुधारने का मौका देती है। इसके बजाय कि हम इसे हार मानने का कारण बनाएँ, इसे अपनी ताकत में बदलना सीखें। जीवन में हमेशा उजाले की किरण होती है। बस हमें उसे खोजने और उसकी ओर बढ़ने का साहस रखना चाहिए।

* सोनु वासनिक
कुक्



मोहल्ले का नायक

हर मोहल्ला अपनी विशेषता और अपनी कहानियों के साथ जीता है। मोहल्ले के लोग, उनकी आदतें, उनकी परंपराएं, और उनके बीच का मेलजोल इसे एक खास पहचान देते हैं। ऐसे में हर मोहल्ले में कोई न कोई ऐसा व्यक्ति होता है जिसे “मोहल्ले का नायक” कहा जा सकता है। यह नायक अपने कार्यों, व्यवहार या समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी के कारण दूसरों के लिए आदर्श बनता है।

नायक की पहचान

मोहल्ले का नायक कोई साधारण व्यक्ति हो सकता है, लेकिन उसकी पहचान उसके असाधारण कार्यों से होती है। वह व्यक्ति समाज के लोगों की मदद करता है, उनकी समस्याओं को हल करने में योगदान देता है, और लोगों को एक साथ जोड़कर रखता है।

✱ **नेतृत्व क्षमता** : नायक वह होता है जो मुश्किल समय में आगे बढ़कर नेतृत्व करता है।

✱ **मददगार स्वभाव** : दूसरों की मदद के लिए तत्पर रहना उसकी खासियत होती है।

✱ **आदर्श चरित्र** : उसका आचरण ऐसा होता है जो दूसरों को प्रेरित करता है।

नायक का योगदान

मोहल्ले का नायक समाज में एकता, सहयोग और आपसी समझ विकसित करने का काम करता है। वह मोहल्ले की समस्याओं, जैसे सफाई, बिजली, पानी या सुरक्षा को सुलझाने के लिए पहल करता

है।

✱ **सामाजिक कार्य** : वह सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है, जैसे त्योहारों पर आयोजन, गरीबों की मदद, और जरूरतमंदों को समर्थन।

✱ **युवाओं के लिए प्रेरणा** : नायक युवाओं को शिक्षित और प्रेरित करता है।

✱ **संकट में साथी** : चाहे किसी की बीमारी हो या कोई अन्य कठिनाई, नायक हमेशा साथ खड़ा रहता है।

मोहल्ले का नायक कोई बुजुर्ग व्यक्ति हो सकता है जो वर्षों से समाज की सेवा कर रहा है, या कोई युवा जो अपने समय और ऊर्जा को समाज के लिए समर्पित करता है। ऐसे नायक हमारे समाज को सशक्त और प्रगतिशील बनाते हैं।

मोहल्ले का नायक केवल एक व्यक्ति नहीं होता बल्कि वह समाज की आत्मा होता है। उसके योगदान से मोहल्ला एक परिवार जैसा बनता है। ऐसे नायकों को सम्मान देना और उनकी प्रेरणा से आगे बढ़ना हर व्यक्ति का कर्तव्य है।

यह नायक हमें यह सिखाता है कि समाज की भलाई में ही हमारी भलाई है, और दूसरों की मदद से ही हम एक बेहतर और खुशहाल दुनिया बना सकते हैं।

✱ **विजय कांबले**
टी आर वर्कर



जीवन का सफर

राहें अनजानी, मंजिलें दूर,
ख्वाबों की चादर, अरमानों का नूर।
कभी धूप तेज़, कभी छांव गहरी,
जीवन का सफर, ये कथा है सुनहरी।
हर कदम पर मिलती नई कहानियां,
कभी हंसी के पल, कभी परेशानियां।
खुद को बनाना, खुद से लड़ना,
गिरकर उठना, आगे बढ़ना।
खुशियों की बौछार, गम के बादल,
हर मोड़ पे दिखते नये-नये जंगल।
पर मंजिल का जादू, खींचे हरदम,
जीवन का सफर, ना रुकेगा ये कदम।
जो पाया, वो भी खास है,
जो खोया, उसका एहसास है।
हर अनुभव सिखाए नयी सीख,
जीवन का सफर, बस आगे ही देख।
तो चलो साथी, उठाओ ये क़दम,
चमकेगा तुम्हारा भी एक नया परचम।
ख्वाबों को पकड़ो, न हारो जिगर,
जीवन का सफर है, ये है अमर।

अनिल घरडे

सहा. हिंदी अनुवादक



माँ का आँचल

माँ का आँचल, सुकून का साया,
जिसमें छिपा हर दर्द पराया।
नरम हथेलियाँ, दुआओं की बार्ते,
उसकी गोद में मिलें स्वर्ग के रास्ते।
चले आँधी, या बरसे बादल,
माँ का आँचल बने सुरक्षा का कंबल।
हर आहट पर जागे वो रातजगे,
हमारे सपनों के लिए वो खुद को भुला दे।
उसकी ममता, जैसे नदी का पानी,
निर्मल, पवित्र, और सदा जुबानी।
हर मुश्किल में उसका चेहरा दिखे,
उसकी दुआओं से हर राह सुलझे।
आँचल के कोने में छुपा वो प्यार,
जिससे बढ़ता है जीवन का विस्तार।
उसकी ममता का ना कोई मोल,
वो तो धरती पर है खुदा का प्रतीक अनमोल।
माँ का आँचल, वो मंदिर का दीप,
जिसमें छिपा हर गहरे राज का बीज।
माँ, तुझसे ही है ये संसार मेरा,
तेरे आँचल में है सारा सुख।

अनिल घरडे

सहा. हिंदी अनुवादक

वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा में हिन्दी भाषा का स्वरूप

संस्कृत भाषा से निःसृत हिन्दी ऐसी भाषा है जो अनेक बोलियों के रूप में उत्तर भारत और मध्य भारत की मातृभाषा है। वह कई बोलियों और उपभाषाओं से प्रभावित होने के कारण समन्वयात्मक है। हिन्दी की सभी उपभाषाएँ और बोलियाँ हिन्दी में व्यापक अर्थ में आ जाती हैं। वस्तुतः हिन्दी शब्द उतना एकरूप भाषा के रूप में वृहत नहीं होता जितना परम्परा के अर्थ में होता है। भाषा और विज्ञान अविच्छिन्न रूप से समवेत है। भाषा के बिना तथ्यों की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती। इसलिए भाषा को सभी तथ्यपरक विषयों से सम्बन्धित नहीं किया जा सकता है। अतएव वैज्ञानिक उपलब्धियों को अनुवाद के द्वारा करने के प्रयास किए गए हैं ताकि वैज्ञानिक उपलब्धियों को जनमानस तक पहुँचाया जा सके। भाषा प्राकृतिक और कृत्रिम रूपों में दो प्रकार की होती है। प्राकृतिक भाषा वह है जो स्वतः स्फुटित हो और स्वाभाविक रूप से जनसामान्य की भाषा हो। कृत्रिम भाषा विज्ञान की भाषा होती है। वह शब्द को अनेकार्थता से हटाकर एकार्थता की ओर लाता है।

विज्ञान के विकास के साथ ही साथ शब्दों का विकास भी आवश्यक है। विश्व में जो भी नयी वस्तुएँ आयेगी उनको प्रकट करने के लिए नये शब्द देने पड़ेंगे। वैज्ञानिक साहित्य ज्ञान मीमांसीय होता है। अतएव उसकी मूल प्रवृत्ति सूचनात्मक और विवेचनात्मक होती है। अपने उद्देश्य की अभिपूर्ति के लिए वैज्ञानिक साहित्य का लेखन सुनिश्चित अर्थवाली पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग करता है। इस शब्दावली का अर्थ सुनिश्चित होता है। जिसे विज्ञान का अध्येता उसी रूप में ग्रहण करता है।

राजभाषा का वैज्ञानिक स्वरूप :- आज के वैज्ञानिक युग में वही भाषा लोकप्रिय होती जिसका व्याकरण विज्ञान संगत होगा, जिसकी लिपि कम्प्यूटर की लिपि होगी। हिन्दी भाषा इस दृष्टि से समृद्ध है। भारत में 'चाल्स विल्किन्स' और 'पंचानन कर्मकार' के द्वारा 1770 ई. में देवनागरी लिपि विकास के बाद हिन्दी में पुस्तकों पत्रिकाओं, समाचार पत्रों की संख्या में वृद्धि हुई। मोनो और लाइनों की मदद से हिन्दी के टाइप और पूरी पंक्तियाँ डालने की सुविधा ने भी प्रकाशन उद्योग को

बढ़ावा दिया। अब आफसेट पद्धति से छपाई शीघ्र हो जाती है।

भारत सरकार द्वारा दिशानिर्देश :- दिल्ली में केन्द्र सरकार के हिन्दी निदेशालय एवं वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के केंद्रीय कार्यालय होने के कारण उनके समस्त तकनीकी प्रकाशन स्वतः ही उपलब्ध हो रहे हैं। इस सम्बन्ध में भारत सरकार द्वारा सन 1965 ई. में प्रकाशित - 'वृहत प्रशासन शब्दावली' और 'विधि शब्दावली' के नाम रेखांकित करने योग्य है।

उल्लेखनीय है कि सन 1979 में संघ लोकसेवा आयोग द्वारा भारतीय प्रशासनीकय सेवा परीक्षा के सभी प्रश्नपत्रों के लिए हिन्दी तथा अष्टम सूची में उल्लेखित अन्य भारतीय भाषाओं को माध्यम के रूप में अपनाने की सुविधा दे दिए जाने के कारण हिन्दी को वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा के रूप में विकसित करने की दिशा में विभिन्न स्तरों पर ठोस प्रयास होने लगा। इसी क्रम में भारत सरकार द्वारा सन 1950 ई. में वैज्ञानिक शब्दावली मंडल की स्थापना की गयी।

इसने 10 वर्ष की अवधि में हिन्दी में तीन लाख वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्द तैयार किए जिन्हें सन 1961 में केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय की ओर से "पारिभाषिक शब्द संग्रह के रूप में प्रकाशित किया गया। इसी वर्ष 1961 ई. में केन्द्र सरकार ने वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग का गठन किया जो विज्ञान की सभी शाखाओं से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण एवं प्रकाशन कर चुका है। इस दिशा में नित्य नवीन अपेक्षाओं के अनुरूप उपयुक्त शब्दावली के निर्माण में पूरी तन्मयता से लगा हुआ है।

राजभाषा का तकनीकी स्वरूप : इस संबंध में यह भी द्रष्टव्य है कि तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा रक्षा, डाक-तार विभाग, रेलवे आदि से सम्बन्धित शब्दावलियों के अतिरिक्त वनस्पति विज्ञान, प्राणि विज्ञान और भू-विज्ञान संबंधित पारिभाषिक शब्दकोष भी तैयार किये गये। इनके सहयोग से आयुर्विज्ञान जैसे अनप्रयुक्त विज्ञानों से संबंधित तकनीकी शब्दकोष तैयार कराये गये। इसके अतिरिक्त हिन्दी माध्यम

से पशुचिकित्सा और भेषजी आदि के शिक्षण हेतु पुस्तकें भी प्रकाशित करायी गयी हैं।

आयोग द्वारा 'ज्ञान सिंधु गरिमा' और 'विज्ञान सिंधु गरिमा' नामक दो पत्र भी निकल रहे हैं। अन्य जो महत्वपूर्ण दायित्व आयोग द्वारा निभाया जा रहा है उनमें हिन्दी भाषी राज्यों के विश्वविद्यालयों के शिक्षकों को हिन्दी की नवनिर्मित व वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली से परिचित कराने के लिए समय-समय पर अलग-अलग स्थानों पर विभिन्न गोष्ठियों का आयोजन विशेष उल्लेखनीय है। इससे व्यवहारिक व अनुप्रयोग स्तर पर वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा के रूप में हिन्दी के विकास प्रक्रिया को निश्चित रूप से बल मिलेगा। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 में संघीय सरकार को हिन्दी के प्रचार-प्रसार का दायित्व तथा विकास का दिशा संकेत देते हुए कहा गया है:-

'जहाँ आवश्यक अथवा वांछनीय हो वहाँ उसके (हिन्दी के) शब्द भण्डार के लिए मुख्यतः संस्कृत से तथा गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करना संघ का कर्तव्य होगा।' इसी दिशा-निर्देश के आधार पर संघ शिक्षा मंत्रालय ने 'केंद्रीय शिक्षा परामर्श मंडल' की सिफारिश पर 1950 में एक 'वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली बोर्ड' का गठन किया। सन 1982 में शिक्षा मंत्रालय के अन्तर्गत एक 'हिन्दी-अनुभाग' की स्थापना की गयी। इस अनुभाग द्वारा तकनीकी शब्दावली के कई संग्रह तैयार किये गये और उनकी प्रामाणिकता की पुष्टि के लिए विषयानुसार अलग-अलग विशेषज्ञ समितियों का गठन किया गया। कार्य विस्तार होने के कारण हिन्दी अनुभाग को हिन्दी प्रभाग का दर्जा दे दिया गया जिसके अन्तर्गत हिन्दी के वैज्ञानिक व तकनीकी भाषा के रूप में विकास के लिए विधि स्तरों पर बहुआयामी योजनाएँ हाथ में ली गयी जिन्में नागरी टंकण यंत्र के मानक कुंजीपटल के निर्माण और वर्तनी के मानवीकरण की प्रक्रिया भी शामिल थी। इस विषय में सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रस्थान बिन्दु था 1 मार्च 1960 को केंद्रीय हिन्दी निदेशालय की स्थापना। इसे सर्वप्रथम वैज्ञानिक शब्दावली और पारिभाषिक कोष के निर्माण का कार्य सौंपा गया। हिन्दी अनुभाग और हिन्दी प्रभाग द्वारा संरक्षित जो तीन लाख पारिभाषिक शब्द विषयानुसार अलग-अलग संग्रहों के रूप में छप चुके थे उन्हीं को 01 अक्टूबर 1961 में गठित वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग में समेलित रूप से एक लाख प्रतिविधियों वाले पारिभाषिक शब्द प्रकाशित हुए। आनेवाली शताब्दी अंतरराष्ट्रीय संस्कृति की शताब्दी होगी और सम्प्रेषण के नए-नए माध्यमों व आविष्कारों से वैश्वीकरण में अनुवाद की महती भूमिका होगी। इससे "वधुधैव कुटुम्बकम्" की उपनिषदीय अवधारणा साकार होगी। इस दृष्टि से सम्प्रेषण व्यापार के उन्नायक के रूप में अनुवादक एवं अनुवाद की भूमिका निर्विवाद रूप से अति महत्वपूर्ण सिद्ध होती है।

राजभाषा का प्रशासनिक क्षेत्र में योगदान:- हम हिन्दी को बोलचाल की के रूप में काम में लेते हैं तो उसे पूर्णतया कार्यरूप में लाने का भी प्रयास किया जाना चाहिए। अतः हम हिन्दी भाषी बने हिन्दी में सोचें, बोलें तथा लिखें भी। उस सोच के कारण ही आज प्रशासनिक कार्य

राजभाषा में होना अनिवार्य बन चुका है। किसी भी संस्था की गृह पत्रिका उसकी सक्त क्रियाशीलता जागरूकता एवं उपलब्धियों की प्रतिबिम्ब होती है। केन्द्र में हो रहे अनुसंधान कार्यों को जन-साधारण तक पहुँचाने में ये पत्रिकाएँ एक अहम भूमिका निभा रही हैं। आई. सी. एम. आर भी हिन्दी विज्ञान पत्रिकाओं का हिमायती रहा है। सभी संस्थानों का वेब-पेज हिन्दी में बनाये गये हैं।

केन्द्र में राजभाषा के प्रयोग को उत्तरोत्तर बढ़ाने के लिए नियमित रूप से हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन भी संस्थानों में किया जा रहा है। इन कार्यशालाओं में प्रशासन व लेखा अनुभाग में कार्यरत कर्मचारी भाग लेते हैं जिनमें केन्द्र के या केन्द्र के बाहर के विषय-विशेषज्ञ, कर्मचारियों को हिन्दी में सरलता से काम करने के महत्वपूर्ण सुझाव देते हुए हिन्दी में कार्य करने को प्रेरणा व प्रोत्साहन देते हैं।

हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन :- हिन्दी में कार्य करने के उत्साह को अधिकाधिक बढ़ाने हेतु सरकारी संस्थानों में दिनांक 14 से हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया जाना निश्चित किया गया है। पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं, जैसे-श्रुतिलेख प्रतियोगिता, हिन्दी टिप्पण व पत्र लेखन प्रतियोगिता, कार्यालय शब्दावली ज्ञान, निबंध लेखन प्रतियोगिता सुलेख प्रतियोगिता, जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता है।

यूनिकोड तकनीक में सहायक :- यूनिकोड एक ऐसी तकनीक है जो कम्प्यूटर द्वारा फाइलों के आदान-प्रदान में काम आती है। यूनिकोड की सहायता से कम्प्यूटर पर हिन्दी में टाइप जानने वाला तो काम कर ही सकता है। साथ ही जो लोग कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम करना चाहते हैं और कर नहीं पाते हैं, वे भी बिना विशेष प्रयत्न किए कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम कर सकते हैं। उपर्युक्त प्रोत्साहन के कारण अब कर्मचारी एवं अधिकारी गण प्रशासनिक कार्य हिन्दी में करने को उत्सुक देखे जा रहे हैं। वैज्ञानिक युग में हिन्दी की उपादेयता समाप्त नहीं हुई है। हिन्दी भाषा एक जीवत भाषा है और अपनी संप्रेषणीयता के कारण ही हिन्दी स्वतंत्रता संग्राम की भाषा बन पाई है। हिन्दी को क्लिष्ट भाषा न बनाते हुए इसके सरलीकरण पर अगर जोर दिया जाये तो अवश्य ही ये अपना योगदान का दायरा वैज्ञानिक, तकनीकी और प्रशासनिक क्षेत्रों में बढ़ा सकती है। वैश्वीकरण के दौर में आज परिस्थितियाँ बदल गई हैं और समस्त टी.वी. चैनलों सिनेमा एफएम रेडियो इत्यादि में आज यह भाषा एक आवश्यकता के रूप में उभर कर सामने आ रही है जो हम भारतीयों के लिये गर्व की बात है।

करते हैं तन-मन से बंदन
जन-गण-मन की अभिलाषा का
अभिनंदन अपनी संस्कृति का
आराधन अपनी भाषा का ।

*** निजहत खान**
सहा. सह टकक



पर्यावरण प्रदूषण

पर्यावरण प्रदूषण का मतलब है। पर्यावरण में दूषक पदार्थों के प्रवेश से प्राकृतिक संतुलन में होने वाला दोष। प्रदूषण से पर्यावरण और जीव-जंतु को नुकसान पहुंचता है। यह मनुष्य और अन्य जीवित प्राणियों के स्वास्थ्य के लिये सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है, प्रदूषण के कुछ प्रमुख कारण ये हैं:

- * कारखाना से धुएँ का उत्सर्जन।
- * कोयले के दहन से कार्बन डाय ऑक्साइड और सल्फर डायऑक्साइड का उत्सर्जन।
- * प्रकृति से बनी चीजों के अवशेष को मानव निर्मित चीजों के अवशेष को साथ मिलाना। पर्यावरणीय प्रदूषण को पर्यावरणीय घटकों के आधार पर अलग-अलग तरह से बाटा जाता है, जैसे मृदा प्रदूषण, वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण। प्रदूषण से समाज के समग्र कल्याण को नुकसान होता है, लेकिन इसका असर कमजोर वर्गों पर ज्यादा होता है, पर्यावरण वह परिवेश है, जिसमें हम रहते हैं। लेकिन प्रदूषकों द्वारा हमारे पर्यावरण का दूषित होना पर्यावरण प्रदूषण है। वर्तमान चरण जिसे हम देख रहे हैं, वह सब और उसके साधनों एवं संसाधनों को सदियों से हो रहे दोहन का कारण है। पर्यावरण प्रदूषण के कारण पृथ्वी अपना संतुलन बहाल नहीं कर सकती। मानव शक्ति ने पृथ्वी पर जीवन का निर्माण और विनाश किया है। पर्यावरण के कारण में मानव की महत्वपूर्ण भूमिका है। पर्यावरण प्रदूषण प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से मनुष्यों और अन्य प्रजातियों के जीवन को प्रभावित करता है, ये जीव सदियों से पृथ्वी

पर मनुष्यों के साथ सह-अस्तित्व में है। वायु पर कार्बन और धूल के कण हवा में धुलकर स्मॉग के रूप में फैल जाते हैं। जिससे हमारे श्वसन तंत्र को नुकसान पहुंचता है। विनिर्माण इकाइयों से निकलने वाले कार्बन धुएँ और वाहनों के चलने से होने वाले कार्बन उत्सर्जन होते हैं। इसके अलावा, ये कारक पक्षियों की प्रतिका प्रणाली का प्रभावित करते हैं। यह शरीर प्रणाली और शरीर के अंगों को भी प्रभावित करता है।

मानव द्वारा छोड़ा गया जैविक और रासायनिक अपशिष्ट दोनों ही सड़ने से भूमि को नुकसान पहुंचाते हैं, पानी किसी भी प्रदूषक से आसानी से दूषित हो जाता है, चाहे वह मानव मल हो या कारखानासे रासायनिक पदार्थ साथ ही, हम इस पानी का उपयोग फसलों की सिंचाई के लिए करते हैं। उसके अलावा इसी दूषित पानी को पिये से जानवर की मौत भी हो जाती है। इसके अलावा भूमि के लगभग 80% प्रदूषक जैसे रासायनिक औद्योगिक और अपशिष्ट जल निकायों में समा जाते हैं। जल निकाय अंततः समुद्र से जुड़ते हैं, जिसका अर्थ है कि यह प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से समुद्र की जैव विविधता को प्रदूषित करता है। दूषित मिट्टी और पानी की वजह से फसल या कृषि उत्पाद भी विषाक्त हो जाते हैं। इसके अलावा दूषित भोजन रस हमारे स्वास्थ्य और जीवनशैली खराब हो रही है।

*** संदीप द्विवेदी**

शिफ्ट बॉस

हिन्दी राजभाषा

भारत देश अनेकता में एकता के लिए विश्व में प्रसिद्ध है जिसका पहला प्रमाण है भाषा। भारत में कई प्रकार की भाषाएँ बोली, लिखी एवं पढ़ी जाती हैं। भारतीय संविधान में 22 भाषाओं को आधिकारिक भाषा के रूप में जगह दी है परन्तु संपूर्ण भारत में सबसे अधिक प्रचलित तथा बातचीत करने एवं विचारों का आदान-प्रदान करने में सबसे सहज हिन्दी को माना जाता है। हिन्दी ने हमें विश्व में एक नई पहचान दिलाई है। हिन्दी दिवस भारत में हर वर्ष 14 सितंबर को मनाया जाता है। हिन्दी विश्व की प्राचीन, समृद्ध और सरल भाषा होने के साथ-साथ हिन्दी हमारी मातृभाषा है यह दुनियाभर में हमें सम्मान दिलाती है। हमारे देश का नाम हिन्दुस्तान भी इसी कारण पड़ा है। यह भाषा हमारे सम्मान स्वाभिमान और गर्व की भाषा है। यह भाषा विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली तीसरी भाषा है।

भारत की स्वतंत्रता के बाद 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने एकमत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी भारत ही भारत की राजभाषा होगी। इसी महत्वपूर्ण निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर सन 1953 से संपूर्ण भारत में प्रतिवर्ष 14 सितंबर को 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। हिन्दी का उचित स्थान एक राष्ट्रभाषा के रूप में है परन्तु अंग्रेजों के द्वारा शासनकाल में अधिकतर औपचारिक कार्य अंग्रेजी भाषा में हो रहे थे जिसे बदलना मुश्किल हो गया तथा इसके विरोध में भी लोग एकजुट हो गये इसी लिए हमें हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया।

हिन्दी भाषा की सर्वप्रथम विशेषता है इसका सबसे अधिक प्रचलन। कश्मीर से कन्याकुमारी तक, साक्षर से निरक्षर तक प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति हिन्दी भाषा को आसानी से बोल - समझ लेता है। यही इस भाषा की पहचान भी है कि बोलने और समझने में किसी को कोई परेशानी नहीं होती है। यह भाषा हमारी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। हिन्दी हमारे पूर्वजों 11वीं शताब्दी से बोली और पढ़ी जा रही है।

इसका सहयोग स्वतंत्रता हासिल करने में भी रहा है। जहाँ भिन्न भाषी लोग अंग्रेजों के खिलाफ लड़ रहे थे तब उन्हें स्वतंत्रता के लिए एकजुट करने में हिन्दी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिन्दी शिक्षा और साहित्य का महत्वपूर्ण माध्यम है। हमारे देश में शिक्षा व्यक्ति के विकास का महत्वपूर्ण अंग है जिसमें बचपन की वर्णमाला से महाविद्यालय की पढ़ाई, हमें हिन्दी भाषा में समझने में सहज लगती है। हिन्दी की खासियत रही है कि इसने हर भाषा के शब्दों को अपनाया है जैसे उर्दू, फारसी, अंग्रेजी आदि के शब्द हम आज भी



बोलचाल में इस्तमाल करते हैं।

हिन्दी भाषा सर्वगुण भाषा है परन्तु आजकल की पीढ़ी पश्चिमी संस्कृति की ओर आकर्षित हो रही है जिस कारण उन्हें हिन्दी की मात्राएँ बोलने में असुविधा होती है। मोबाईल की दुनिया में एक नया आविष्कार हुआ है 'रोमन हिन्दी' का जिसका अर्थ हिन्दी में होता है परन्तु लिखी अंग्रेजी भाषा में है। यह लोगो को अधिक सरल लगती है। आजकल की पीढ़ी अंग्रेजी को अपनाने में ज्यादा अग्रसर है। भारत में हर व्यक्ति अपने बच्चों को अंग्रेजी में पढ़ाना चाहता है। कोई व्यक्ति हिन्दी माध्यम की शिक्षा को महत्व नहीं देता है। हम बच्चों को हिन्दी की गिनती की समझ देने से पहले अंग्रेजी की ओर बढ़ावा देते हैं। लोगो को नमस्ते नहीं बल्कि गुड मॉर्निंग एवं गुड नाईट कहते हैं। हिन्दी भाषा के सभी तर्क अपनी अपने स्थान पर सही है परन्तु इसे उच्च स्थान पर पहुँचाने के लिए बदलाव की आवश्यकता है। दूसरों से बदलाव के अपेक्षा करने से पहले स्वयं अपने दैनिक जीवन में बदलाव करें। अपने घरों में हिन्दी समाचार पत्रिका को बढ़ावा दे। सोशल मिडिया में रोमन हिन्दी की जगह वास्तविक हिन्दी का प्रचार करें। अंत के शब्द कुछ इस प्रकार :

“स्वयं बदलेगें, समाज बदलेगा
समस्या का इलाज मिलेगा
हिन्दी भाषा को स्थान पहुँचाने पर
हम सबका प्रयास सफल बनेगा।”
जय हिन्द, जय भारत

✱ साक्षी राजकुमार मेथ्राम
पी.आर. वर्कर,

हिन्दी हमारी राजभाषा



सुर भी है, लय भी है, और तान भी है हिन्दी है।
हम भारत के लोगों की पहचान हिन्दी है।
भाषायी भेद मिटाने लगी
हिन्दी सबको भाने लगी॥

भारत के संविधान में हिन्दी का महत्व

जनता की समझ में, अब संविधान हो।
न्यायलयों में, हिन्दी में काम हो॥
जनता में चर्चा आम हो रहा।
हिन्दी में सरकारी काम हो रहा ॥

हिन्दी हिन्द की पहचान

हम देखते रहे, वो सरहदों पार हो गई।
हिन्दी विश्व में बेमिसाल हो गई॥
हिन्दी का प्रसार अब दिख रहा है।
विदेशी भी हिन्दी सिख रहा है॥

बापू का हिन्दी के लिए हिन्दुस्तान का सपना

जाति, धर्म, सम्प्रदाय के, ये झगड़े मिटाएंगी।
हम भारत के लोगों को, हिन्दी करीब लाएंगी॥
विश्व में हिन्दी की पहचान बनेगी।
हिन्दी भारत की शान बसेगी॥

* मनोज रामटेके,
सहा.सह टंकक ,

हिंद मेरा देश, हिंदी मेरी मातृ भाषा,
यही है हिंदी की परिभाषा।

सबसे प्यारी सबसे न्यारी,
हिंदी है राजभाषा हमारी।

हिंदी देश की भाषा है,
हर भारत वासी की अभिलाषा है।

हम भारतीय सभी, भाषाओं का करते सम्मान,
पर हिन्दी ही है हमारी पहचान।

हिंदी है हम सबकी पहचान
इसी भाषा में लिखा गया है संविधान।

सबको करती एक समान,
हिन्दी भाषा बड़ी महान।

भारत माँ की शान है, हिंदी
हम सबका अभिमान है हिंदी ।

बापु की हर बात थी, न्यारी
स्वच्छ हो भारत, हिंदी प्यारी ।

देखो समझों बात हमारी
हिन्दी भाषा सबसे प्यारी ।

देश की शान है हिंदी, पहचान है हिंदी
क्योंकि हर भारतीय के दिल में, विराजमान है हिंदी।

* रीता ठाकरे
सहायक (रचना)



आमंत्रण

सूरज स्वयं ही उदित नहीं होता,
अनंत अपेक्षाएं आमंत्रण देती है कि प्रकृति का
प्रथम आचमन सूर्य प्रकाश से हो।

चाँद भी यूँ ही नहीं

भटकता रात भर।

वह जागती आंखों का स्वप्न

और बैचन दिलों का

अपना बन कर चलता रहता है।

पवन को क्या पड़ी है

लहर लहर लहराने की,

वह मंद-मंद मुस्काती

पड़ी रहती मांद में,

किंतु स्वासों में फँसी

जिंदगी की फाँस को सुलझाने उलझ जाती है
झंझावातों से।

फिर हम क्यों हैं अनमने से?

आंखों में आशा,

जिह्वा पर जोश,
हाथों में इच्छाओं के अस्त्र
और कदमों में दम रख
तैयार हो जाएं हम
हर कठिनाई का सामना करने।

हमारे साथ है

वो सूरज, वो चाँद,

यह धरती और अंबर।

तो उठो और

उल्लासित मन से आवाज दो।

जीत जाएंगे हम हर जंग।

हम भारतीय हैं जो संग संग।

दिनेश कनोजे 'देहाती'
वरिष्ठ चार्जहैंड



जीवन में स्वच्छता की भागीदारी तथा हिन्दी भाषा का महत्व

जीवन में स्वच्छता का महत्व, हमारे जीवन में बहुत जरूरी है। इसे हर रोज के जीवन में उपयोग में लाना चाहिए एवं इसके प्रति अपने आस-पास में इसका प्रचार प्रसार भी अधिक करना चाहिए। स्वच्छता किसी भी स्थान में अहम भूमिका निभाती है। इससे हमारे दैनिक जीवन में बहुत प्रभाव पड़ता है। स्वच्छता के बिना हमारा घर हो या ऑफिस अधुरा है। गाँधीजी के जन्म दिवस के अवसर पर स्वच्छता एवं सुरक्षा का अभियान चलाया गया है और हमें इसे रोज दैनिक जीवन में उपयोग में लाना चाहिए जिससे हम हमेशा स्वस्थ बने रहे।

भाषा पर हमेशा गर्व करते रहना चाहिए एवं हिन्दी भाषा का उपयोग अधिक करना चाहिए। हिन्दी भाषा हमारी राजभाषा है तथा इसका प्रचार प्रसार भी अधिक करना चाहिए।

मॉयल लिमिटेड हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार करने का प्रयास करता रहता है व सभी खदानों में अधिक से अधिक प्रचार प्रसार करता है एवं सभी खदानों में हिन्दी पखवाड़ा मनाया जाता है। हिन्दी भाषा हमें आफिस कार्य में भी उपयोग करना चाहिए।

भारत में हर वर्ष 14 सितंबर के दिन हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। हिन्दी भाषा हमारे गर्व का प्रतिक है। हमें, अपने हिन्दी

*** नविन घटारे**

सामग्री सह भंडार सहायक

जीवन की राम कहानी



जीवन के 20 साल हवा की तरह उड़ गए। फिर शुरू हुई नौकरी की खोज। ये नहीं वो, दूर नहीं पास। ऐसा करते करते 2-3 नौकरियाँ छोड़ते एक तय हुई। थोड़ी स्थिरता की शुरुआत हुई।

फिर हाथ आया पहली तनखाह का चेक। वह बैंक में जमा हुआ और शुरू हुआ अकाउंट में जमा होने वाले शून्यों का अंतहीन खेल। 2-3 वर्ष और निकल गए। बैंक में थोड़े और शून्य बढ़ गए।

उम्र 25 हो गयी और फिर विवाह हो गया। जीवन की राम कहानी शुरू हो गयी। शुरू के एक 2 साल नर्म, गुलाबी, रसीले, सपनीले गुजरे। हाथों में हाथ डालकर घूमना फिरना, रंग बिरंगे सपने। पर ये दिन जल्दी ही उड़ गए।

और फिर बच्चे के आने ही आहट हुई। वर्ष भर में पालना झूलने लगा। अब सारा ध्यान बच्चे पर केन्द्रित हो गया। उठना बैठना खाना पीना लाड दुलार।

समय कैसे फटाफट निकल गया, पता ही नहीं चला। इस बीच कब मेरा हाथ उसके हाथ से निकल गया, बातें करना घूमना फिरना कब बंद हो गया दोनों को पता ही न चला।

बच्चा बड़ा होता गया। वो बच्चे में व्यस्त हो गयी, मैं अपने काम में। घर और गाड़ी की किस्त, बच्चे की जिम्मेदारी, शिक्षा और भविष्य की सुविधा और साथ ही बैंक में शून्य बढ़ाने की चिंता।

उसने भी अपने आप काम में पूरी तरह झोंक दिया और मेने भी इतने में में ३५ का हो गया। घर, गाड़ी, बैंक में शून्य, परिवार सब है फिर भी कुछ कमी है? पर वो है क्या समझ नहीं आया। उसकी चिड़ चिड़ बढ़ती गयी, मैं उदासीन होने लगा।

इस बीच दिन बीतते गए। समय गुजरता गया। बच्चा बड़ा होता गया। उसका खुद का संसार तैयार होता गया। कब 10वीं आई और चली गयी पता ही नहीं चला। तब तक दोनों ही चालीस बयालीस के हो गए। बैंक में शून्य बढ़ता ही गया।

एक नितांत एकांत क्षण में मुझे वो गुजरे दिन याद आये और मौका देख कर उस से कहा 'अरे जरा यहाँ आओ, पास बैठो। चलो हाथ में हाथ डालकर कही घूम के आते हैं।'

उसने अजीब नजरो से मुझे देखा और कहा कि 'तुम्हे कुछ भी सूझता है यहाँ ढेर सारा काम पड़ा है तुम्हे बातों की सूझ रही है।' कमर में पल्लू खोँस वो निकल गयी। तो फिर आया पैतालिसवा साल, आँखों पर चश्मा लग गया, बाल काला रंग छोड़ने लगे, दिमाग में कुछ उलझने शुरू हो गयी।

बेटा उधर कॉलेज में था, इधर बैंक में शून्य बढ़ रहे थे। देखते ही देखते उसका कॉलेज खत्म। वह अपने पैरो पे खड़ा हो गया। उसके पंख फूटे और उड़ गया परदेश।

उसके बालों का काला रंग भी उड़ने लगा। कभी कभी दिमाग साथ

छोड़ने लगा। उसे चश्मा भी लग गया। मैं खुद बुढ़ा हो गया उमरदराज लगने लगी।

दोनों पचपन से साठ की और बढ़ने लगे। बैंक के शून्यों की कोई खबर नहीं। बाहर आने जाने के कार्यक्रम बंद होने लगे।

अब तो गोली दवाइयों के दिन और समय निश्चित होने लगे। बच्चे बड़े होंगे तब हम साथ रहेंगे सोच कर लिया गया घर अब बोझ लगने लगा। बच्चे कब वापिस आयेंगे यही सोचते सोचते बुजुर्गने लगे।

एक दिन यूँ ही सोफे पे बेटा ठंडी हवा का आनंद ले रहा था। वो दिया बाती कर रही थी। तभी फोन की घंटी बजी। लपक के फोन उठाया। दूसरी तरफ बेटा था। जिसने कहा कि उसने शादी कर ली और अब परदेश में ही रहेगा।

उसने ये भी कहा कि पिताजी आपके बैंक के शून्यों को किसी वृद्धाश्रम में दे देना। और आप भी वही रह लेना। कुछ और औपचारिक बातें कह कर बेटे ने फोन रख दिया।

मैं पुनः सोफे पर आकर बैठ गया। उसकी भी दिया बाती खत्म होने को आई थी। मैंने उसे आवाज दी 'चलो आज फिर हाथों में हाथ लेके बात करते हैं'

वो तुरंत बोली 'अभी आई'। मुझे विश्वास नहीं हुआ। चेहरा खुशी से चमक उठा। आँखें भर आईं। आँखों से आंसू गिरने लगे और गाल भीग गए। अचानक आँखों की चमक फीकी पड़ गयी और मैं निस्तेज

हो गया। हमेशा के लिए !! उसने शेष पूजा की और मेरे पास आके बैठ गयी 'बोलो क्या बोल रहे थे?'

लेकिन मेने कुछ नहीं कहा। उसने मेरे शरीर को छू कर देखा। शरीर बिलकुल ठंडा पड़ गया था। मैं उसकी और एकटक देख रहा था। क्षण भर को वो शून्य हो गयी।

'क्या करू ?'

उसे कुछ समझ में नहीं आया। लेकिन एक दो मिनट में ही वो चेतन्य हो गयी। धीरे से उठी पूजा घर में गयी। एक अगरबत्ती की। इश्वर को प्रणाम किया। और फिर से आके सोफे पे बैठ गयी।

मेरा ठंडा हाथ अपने हाथों में लिया और बोली 'चलो कहाँ घुमने चलना है तुम्हे? क्या बातें करनी हैं तुम्हे?' बोलो!!

ऐसा कहते हुए उसकी आँखें भर आईं!!.....

वो एकटक मुझे देखती रही। आँखों से अश्रु धारा बह निकली। मेरा सर उसके कंधों पर गिर गया। ठंडी हवा का झोंका अब भी चल रहा था।

क्या ये ही जिन्दगी है ?

अपनी जिंदगी को अपने तरीके से जीये

* निमीन रोकडे
सहा. सह टंकक



सफलता का मार्ग



दोस्तों, लाइफ में हर बार सफल हो ये जरूरी नहीं, कई बार हमें असफलताओं का भी सामना करना पड़ता है। लेकिन इस बात को हमेशा याद रखिये कि असफलता ही हमारी सफलता तक पहुँचने का मार्ग है। हम कभी भी किसी सफल व्यक्ति की असफलताओं को नहीं देखते और यही सोचते रहते हैं कि उसने क्या किस्मत पाई है! और इसी वजह से आज वह सफल है। लेकिन हर सफलता के पीछे वर्षों की कड़ी मेहनत शामिल होती है। लोग जब असफल होते हैं या कोशिश नहीं करते, तब वे बहुत सारे बहाने देते हैं, जैसे उनकी किस्मत ही खराब थी, उन्हें कुछ करने का मौका नहीं मिला..

हमारी लाइफ इतनी भी लम्बी नहीं है कि हम बहाना बनाते हुए अपनी जिंदगी गुजार दें। हर व्यक्ति कोई न कोई सपना देखता है और वह चाहता है कि उसका सपना पूरा हो लेकिन बहाना बनाने के कारण ही वह आगे कुछ नहीं कर पाता और निराशा से घिरे हुए ही पूरी जिंदगी गुजार देता है। आप सफल न हो पाने के हजारों बहाने सामने रख देंगे लेकिन आज मैं आपके सामने ऐसे बहुत से उदाहरण या कहानी शेयर करूंगा जिससे आप बहाने बनाना ही छोड़ देंगे!

[मैंने कई बार कोशिश की लेकिन मैं असफल रहा सफल नहीं हुआ]

हम मे से ज्यादातर लोग किसी काम को शुरू करते हैं और उसमें एक-दो बार या हद से हद चार-पांच बार फेल हो जाते हैं, हमें सफलता नहीं मिलती और बुरी तरह से असफल हो जाते हैं तब हम खुद से कहते हैं, कि अब बस बहुत हो गया अब मेरा कुछ नहीं हो सकता। इतनी कोशिश करने के बाद फेल हो जाना मेरे लिए काफी दुःख की बात है अब मैं और कोशिश नहीं कर सकता।

ऐसी बातें करके हम और कोशिश ही नहीं करते। अपनी हार स्वीकार कर लेते हैं और निराश बैठ जाते हैं। क्या आप उस व्यक्ति के बारे में जानते हैं जो 21 साल की उम्र में बिजनेस में बुरी तरह फेल

हुआ, एक साल बाद 22 की उम्र जब उसने चुनाव लड़ा उसमें भी वह हार गया दो साल बाद 24 साल की उम्र में उसने फिर से बिजनेस शुरू की और इस बार फिर से बुरी तरह फेल हुआ। 27 साल की उम्र में वह डिप्रेशन में चला गया। 34 साल की उम्र में वह फिर से चुनाव में खड़ा हुआ और फेल हुआ। 45 साल की उम्र में सीनेट के चुनाव में हारा, दो साल बाद वह उपराष्ट्रपति बनने में असफल रहा। 49 साल की उम्र में उसे सीनेट के चुनाव में फिर से बुरी हार मिली लेकिन वही व्यक्ति 52 साल की उम्र में अमेरिका का राष्ट्रपति चुना गया। आप उन्हें जानते ही होंगे, उनका नाम है अब्राहम लिंकन।

उन्होंने कभी भी कोशिश करना नहीं छोड़ा, बार-बार असफल हुए लेकिन सफल होकर ही उन्होंने दम लिया। हम अब्राहम लिंकन को कभी भी असफल नहीं कह सकते, हाँ यदि वे अपनी असफलताओं से घबराकर दुबारा खड़े ही नहीं होते, तब आप उन्हें एक असफल व्यक्ति में गिन सकते थे लेकिन उन्होंने अपनी असफलताओं से सीखा, उसे सीढ़ी की तरह इस्तेमाल किया और वे सफल हुए। वे चाहते तो शर्म से सिर झुका सकते थे और फिर से अपनी वकालत शुरू कर सकते थे लेकिन उन्हें अपनी हार स्वीकार करना पसंद नहीं था।

[बचपन से ही मुझ पर जिम्मेदारियों का बोझ लादा गया]

अक्सर लोगों के पास जब कुछ अपनी असफलताओं को छुपाने के लिए मुखौटा चाहिए होता है तब वे कभी न कभी ऐसी बातें भी करते हैं कि बचपन से ही मुझ पर फैमिली का प्रेशर था इसलिए मैं जिम्मेदारियों में ही उलझकर रह गया और कुछ बड़ा नहीं कर पाया। हमारे देश की प्रख्यात गायिका जिन्हें आप सब लता मंगेशकर के नाम से जानते हैं, उन्हें भी अपना पहला गाना, घर की जिम्मेदारियों को उठाने के लिए ही गाना पड़ा था।



[मंदबुद्धि या बेवकूफ समझा जाना]

लोगों के द्वारा अक्सर सुनने में आता है कि सब मुझे बेवकूफ कहकर ही चिढ़ाते हैं जिससे मेरा आत्मविश्वास और मनोबल गिर जाता है और इसी वजह से मैं आगे नहीं बढ़ पा रहा। सब मुझे मंदबुद्धि कहकर हँसते हैं। क्या आप थॉमस एडिसन को जानते हैं! जब वे चार साल के थे तब उन्हें स्कूल से यह कहकर निकाल दिया गया था कि वो इस दुनिया का सबसे बड़ा मंदबुद्धि है और वह कभी आगे नहीं बढ़ पाएगा। वे मुश्किल से तीन महीने ही अपने स्कूल में पढ़े होंगे उसके बाद उनकी माँ ने ही उन्हें पढ़ाया लिखाया और उसी व्यक्ति ने बड़े होकर बिजली के बल्ब का आविष्कार किया। कहा जाता है कि बिजली बल्ब के आविष्कार से पहले वे १० हजार बार असफल हुए थे तब जाकर उन्होंने बल्ब का आविष्कार किया। उन्होंने ही कहा था कि वे दस हजार बार फेल नहीं हुए बल्कि वे समझ चुके थे कि इन १० हजार तरीकों से बल्ब का निर्माण संभव ही नहीं है। वे अपनी असफलताओं से कभी निराश नहीं हुए और न ही उन्होंने कभी बहानों का सहारा लिया। एक मंदबुद्धि समझा जाने वाला बच्चा कल बल्ब का आविष्कार कर सकता है तो आप भी सब कुछ कर सकते हैं।

[बचपन में मेरे पिता का देहांत हो गया:]

बचपन में जब किसी बच्चे के पिता का देहांत हो जाता है तब वह या तो टूट जाता है या फिर सफलताओं के रिकॉर्ड तोड़ने की सोचता है। या तो वह बन जाता है या फिर बहुत बुरी तरह से बिगड़ जाता है। लोगों के मुँह से ऐसी बातें भी सामने आती हैं कि वे इस वजह से कुछ बड़ा नहीं कर पाए या उन्हें इसलिए सफलता नहीं मिली क्योंकि बचपन से ही उसके पिता का साया उससे छीन गया था और अपने पिता के न होने से सब ज़िम्मेदारियाँ उसी के कंधों पर थी इसलिए वह कुछ बन नहीं पाया।

हमारे देश के सुप्रसिद्ध संगीतकार ए.आर. रहमान के पिता का देहांत भी उनके बचपन में ही हो गया था लेकिन इसके बावजूद उन्होंने अपनी लाइफ में कोई बहाना नहीं बनाया। हाँ वे कई बार फेल भी हुए लेकिन वो जिस मुकाम तक पहुँचना चाहते थे, वहाँ पहुँचकर उन्होंने ये साबित कर दिया कि अगर आप कुछ करना चाहते हैं तो कोई बहाना आपके आगे रुकावट नहीं बन सकता। एक्सीडेंट में मैं अपंग हो गया या दुर्बलता के कारण कुछ नहीं कर पाया बाह्य ये तो बहुत बढ़िया बहाना है, कि आपके पैर नहीं हैं इसका मतलब आप भीख

माँगेंगे, आपके हाथ नहीं मतलब आप इस बहाने से कुछ करेंगे नहीं क्या आप (Nick Vujicic) को जानते हैं जिनके बचपन से ही हाथ पैर नहीं हैं।

लेकिन उन्होंने कभी भी इसका बहाना नहीं बनाया। वो आज पूरी दुनिया में सेमिनार करते हैं, तैराकी करते हैं, गोल्फ खेलते हैं, हर वो चीज करते हैं जो एक नॉर्मल इंसान करता है। वो सभी के लिए एक जीती जागती मिसाल हैं। आप सुधा चंद्रन जी को जानते ही होंगे जो भारतीय फिल्म जगत की अभिनेत्री और एक डांसर हैं उन्होंने अपने दोनो पैर खो दिए लेकिन डांस और एक्टिंग नहीं छोड़ी। बहाना का सहारा इन लोगों ने कभी नहीं लिया और इसलिए आज मैं इनकी बातें आपके सामने शेयर कर रहा हूँ।

[मैं बहुत गरीब हूँ:]

गरीबी कभी भी आपके सफलता का रोड़ा नहीं बन सकती। हमारे देश के प्रधानमंत्री भी एक गरीब घर में पैदा हुए, गुजरात के रेलवे स्टेशन पर चाय बेचने से लेकर आज वे देश के प्रधानमंत्री हैं। डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम साहब को कोई भूल नहीं सकता, लेकिन आप ये क्यों भूल रहे हैं कि रामेश्वरम में वे एक बहुत ही गरीब परिवार में पैदा हुआ थे, अपनी पढ़ाई का खर्च उठाने के लिए वे अखबार बेचते थे और आगे की कहानी आप जानते ही हैं कि आज वे करोड़ों लोगों के लिए एक प्रेरणास्रोत हैं। दोस्तो यदि आप सफल होने के लिए कदम बढ़ा रहे हैं, तो यकीनन आपके रास्ते में ढ़ेरो मुश्किलें आएंगी, आपको बहुत ठोकरें भी खानी पड़ेंगी लेकिन यदि आप अपनी असफलताओं से सीखते हुए आगे बढ़ते जाएंगे तो यही असफलता आपको आपकी सफलता का रास्ता दिखाते जाएगी, जैसे-जैसे आप आगे बढ़ते जाते हैं, प्रेरणा आपके अन्दर आनी शुरू हो जाती है..बस आपको रुकना नहीं है, बहाने नहीं बनाना हैं। क्योंकि जब आप रुक जाते हैं, बहाने बनाना शुरू कर देते हैं तो आप अपने सपने को मारना शुरू कर देते हैं।

हर असफलता के बाद खुद से सवाल करें कि आप फेल हुए तो आपने क्या सीखा आपकी असफलता कभी भी खाली या बर्बाद नहीं जाएगी। यह हमें सिखा रही होती है कि हम अपनी असफलताओं से ही आगे बढ़कर सफलता प्राप्त करते हैं।

✽ जाहीद खान
स्वच्छता निरीक्षक



साइबर सुरक्षा इसे आदत बनाए!



इस डिजिटल युग में, साइबर सुरक्षा केवल एक तकनीकी मुद्दा नहीं है, यह एक व्यक्तिगत जिम्मेदारी है। जिस तरह से गाड़ी चलाने से पहले दरवाजा बंद करना और सीटबेल्ट पहनना एक आदत बन गई है, उसी तरह से अपनी ऑनलाइन मौजूदगी को सुरक्षित रखने के लिए हमें मजबूत साइबर सुरक्षा आदतें विकसित करनी चाहिए। हमें नौ मुख्य आवश्यक आदतों का ध्यान रखना चाहिए, जो न केवल हमारी जानकारी की सुरक्षा करेंगी, बल्कि हमें, हमारे परिवार और सहकर्मियों के लिए एक अधिक सुरक्षित डिजिटल वातावरण का निर्माण करेगी।

नौ आवश्यक साइबर सुरक्षा आदतें

1. क्लिक करने से पहले रुकें!

लिंक पर क्लिक करने या अटैचमेंट खोलने से पहले दो बार सोचें, भले ही वे किसी ऐसे व्यक्ति से आए हों जिसे आप जानते हों।

- हमेशा अज्ञात लिंक पर क्लिक करने के बजाय किसी ज्ञात, वैध स्रोत (जैसे HTTPS) के माध्यम से वेबसाइटों पर जाएं।
- यदि कोई अटैचमेंट संदेहजनक लगे, तो किसी विश्वसनीय विधि के माध्यम से भेजने वाले से पुष्टि करें या क्लिक न करने का विकल्प चुनें।

2. व्यक्तिगत जानकारी के लिए अनुरोधों (Request) को सत्यापित करें!

निजी डेटा के लिए हमेशा अनुरोधों (request) की पुष्टि करें चाहे वह आपका हो या किसी और का।

- धोखेबाज (Scammers) आसानी से विश्वसनीय संपर्कों का प्रतिकारण कर सकते हैं।
- सामान्य गतिविधि के लिए नियमित रूप से वित्तीय विवरण और क्रेडिट रिपोर्ट की समीक्षा करें।
- कई फ़िशिंग संदेशों में वर्तनी और व्याकरण संबंधी त्रुटियाँ होती हैं।
- विचार करें कि अनुरोध (request) वैध है या नहीं। क्या व्यक्ति या संगठन को उस जानकारी की आवश्यकता है?

3. अपने पासवर्ड को नियंत्रित करें!

अपने खातों (accounts) को सुरक्षित रखने के लिए मजबूत, जटिल पासवर्ड बनाना और उन्हें समझदारी से मैनेज करना ज़रूरी है।

- अलग-अलग खातों (accounts) के लिए अलग-अलग पासवर्ड का इस्तेमाल करें। कार्य से संबंधित और व्यक्तिगत पासवर्ड को अलग-अलग रखें।
- पासवर्ड कभी भी शेयर न करें।
- पासवर्ड को बार-बार बदलें।
- ब्राउज़र में पासवर्ड सेव करने से बचे।
- अतिरिक्त सुरक्षा के लिए मल्टी-फ़ैक्टर ऑथेंटिकेशन (MFA) सक्षम करें।

4. अपने डिवाइस सुरक्षित रखें!

अपने कार्यस्थल को लॉक करें और बाहर जाते समय अपने डिवाइस को सुरक्षित रखें।

- हमेशा अपने कंप्यूटर स्क्रीन को लॉक करें।

- अपने फोन और पोर्टेबल डिवाइस को अपने साथ ले जाएं या उन्हें सुरक्षित रूप से रखें।
- जब भी संभव हो मजबूत प्रमाणीकरण विधियों का उपयोग करें।

5. महत्वपूर्ण फ़ाइलों का बैकअप लें!

सुनिश्चित करें कि आप अपने महत्वपूर्ण डेटा का नियमित रूप से बैकअप लेते हैं।

- बैकअप को अन्य स्थान पर भी स्टोर करें।
- संगठन अनुमोदित स्टोरेज समाधान का उपयोग करें।
- यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे ठीक से काम करते हैं कि नहीं, नियमित रूप से बैकअप का परीक्षण करें।

6. संदिग्ध गतिविधि की रिपोर्ट करें!

यदि कुछ संदिग्ध लगता है, तो इसकी रिपोर्ट करें!

- अपने अधिकारी को सचेत करें और संदिग्ध गतिविधियों के लिए अपने संगठन के रिपोर्टिंग प्रोटोकॉल का पालन करें।

7. खुद को और दूसरों को शिक्षित करें!

[नवीनतम साइबर सुरक्षा खतरों और प्रचलन के बारे में जानकारी प्राप्त करते रहें।]

- जब भी आपको अवसर मिले प्रशिक्षण सत्रों में भाग लें और सहकर्मियों के साथ ज्ञान साझा करें।
- एक अच्छी तरह से जानकार टीम, साइबर खतरों के खिलाफ आपकी पहली रक्षा पंक्ति है।

8. सुरक्षित नेटवर्क का उपयोग करें!

संवेदनशील जानकारी के संदर्भ में हमेशा सुरक्षित नेटवर्क का ही उपयोग करें।

- वित्तीय लेन-देन या संवेदनशील काम के लिए सार्वजनिक वाई-फाई से बचें।
- अतिरिक्त सुरक्षा के लिए जब आवश्यक हो तो वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क (VPN) का उपयोग करें।

9. सोशल मीडिया से सावधान रहें!

[ऑनलाइन साझा की जाने वाली व्यक्तिगत जानकारी सीमित रखें ताकि आप अपनी गोपनीयता की रक्षा कर सकें, अपनी सुरक्षा बढ़ा सकें और अधिक सकारात्मक ऑनलाइन अनुभव प्राप्त कर सकें।]

- सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर गोपनीयता सेटिंग की समीक्षा करें।
- मित्र अनुरोधों (friend request) और आपकी जानकारी तक किसकी पहुँच है, इस पर ध्यान दें; लॉक की गई प्रोफाइल से अनुरोध (request) स्वीकार न करें।
- संभावित जोखिमों को कम करने के लिए नियमित रूप से अपनी ऑनलाइन उपस्थिति का परीक्षण करते रहे।

[याद रखें: साइबर सुरक्षा हर किसी की ज़िम्मेदारी है!]

इन आदतों को अपनी दिनचर्या में शामिल करके, आप साइबर खतरों के खिलाफ अपनी सुरक्षा को मजबूत करेंगे। आइए साइबर सुरक्षा जागरूकता और सतर्कता की संस्कृति बनाने के लिए मिलकर काम करें। ऑनलाइन सुरक्षित रहें!

* संकटराम ब्रम्हवंशी
सहा. सह हिंदी अनुवादक

साद्वर्ग पल



59

मॉयल स्थापना दिवस पर स्नेह भोज का सफलतापूर्वक आयोजन

मॉयल की 6 दशक की यात्रा गौरवशाली: सिंह

काठमाडौं, नेपाल, 15 नवम्बर 2024। मॉयल लिमिटेड (MOIL Limited) का स्थापना दिवस के अवसर पर एक सफलतापूर्वक आयोजन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य कंपनी के स्थापना दिवस के अवसर पर एक सफलतापूर्वक आयोजन का आयोजन करना और कंपनी के स्थापना दिवस के अवसर पर एक सफलतापूर्वक आयोजन का आयोजन करना था।



स्नेह भोज का सफल आयोजन

स्नेह भोज का आयोजन मॉयल लिमिटेड के स्थापना दिवस के अवसर पर किया गया था। कार्यक्रम का उद्देश्य कंपनी के स्थापना दिवस के अवसर पर एक सफलतापूर्वक आयोजन का आयोजन करना था। कार्यक्रम का आयोजन मॉयल लिमिटेड के स्थापना दिवस के अवसर पर किया गया था।

मॉयल लिमिटेड के स्थापना दिवस के अवसर पर एक सफलतापूर्वक आयोजन का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम का उद्देश्य कंपनी के स्थापना दिवस के अवसर पर एक सफलतापूर्वक आयोजन का आयोजन करना था। कार्यक्रम का आयोजन मॉयल लिमिटेड के स्थापना दिवस के अवसर पर किया गया था।

मॉयल ने नवम्बर में किया ऐतिहासिक उत्पादन और बिक्री प्रदर्शन

काठमाडौं (पुष्पकोट)।

मॉयल (Manganese Ore India Limited) ने नवम्बर 2024 में अत्यधिक उत्पादन और बिक्री का प्रदर्शन किया। कंपनी ने नवम्बर माह में 1.63 लाख टन मैंगनीज ऑक्साइड का उत्पादन किया, जो एक नए रिकॉर्ड है। इस उत्पादन के साथ, कंपनी ने नवम्बर माह में 1.80 लाख टन का उत्पादन दर्ज किया, जो पिछले वर्ष की तुलना में 1.40 प्रतिशत अधिक है।

कंपनी ने दर्ज की महत्वपूर्ण उपलब्धियां



2025 के पहले अठारह माहों में 1000 करोड़ रुपये का उत्पादन भी हमिल किया, जो पिछले माहों के मुकाबले एक नए रिकॉर्ड है। यह उपलब्धि कंपनी की कार्यक्षमता और उत्पादन की दक्षता के अत्यधिक कार्यों में भी उत्कृष्टतम बुद्धि दर्शाता है। अगले माह नवम्बर 2024 तक, मॉयल ने 63,654 मेट्रिक टन का उत्पादन कर दिया है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 1.28 गुना अधिक है।

मॉयल में हिन्दी पखवाड़ा समापन पर आयोजित हुआ कवि सम्मेलन

काठमाडौं, नेपाल, 15 नवम्बर 2024। मॉयल लिमिटेड में हिन्दी पखवाड़ा समापन पर आयोजित हुआ कवि सम्मेलन। कार्यक्रम का उद्देश्य हिन्दी पखवाड़ा समापन पर आयोजित हुआ कवि सम्मेलन का आयोजन करना था। कार्यक्रम का आयोजन मॉयल लिमिटेड में हिन्दी पखवाड़ा समापन पर आयोजित हुआ कवि सम्मेलन का आयोजन करना था।

राष्ट्र पत्रिका

8 नवम्बर 2024

प्रत्येक व्यक्ति सुरक्षा को जीवन शैली बनाये- सखसेना

भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सुरक्षा पखवाड़े का शुभारंभ किया। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति सुरक्षा को जीवन शैली बनाये- सखसेना का आयोजन करना था। कार्यक्रम का आयोजन भारत सरकार में सुरक्षा पखवाड़े का शुभारंभ किया।



सुरक्षा के प्रति सजगता आवश्यक: सिंह

सुरक्षा के प्रति सजगता आवश्यक है। सुरक्षा के प्रति सजगता आवश्यक है। सुरक्षा के प्रति सजगता आवश्यक है। सुरक्षा के प्रति सजगता आवश्यक है। सुरक्षा के प्रति सजगता आवश्यक है।

भरवेली खदान में खान सुरक्षा पखवाड़े का शुभारंभ किया गया

प्रत्येक व्यक्ति सुरक्षा को जीवन शैली बनाये- सखसेना

भरवेली खदान में खान सुरक्षा पखवाड़े का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति सुरक्षा को जीवन शैली बनाये- सखसेना का आयोजन करना था। कार्यक्रम का आयोजन भरवेली खदान में खान सुरक्षा पखवाड़े का शुभारंभ किया गया।

मॉयल में शत प्रतिशत कार्य हिन्दी में किया जाता है: मयंक जैन

मॉयल लिमिटेड में शत प्रतिशत कार्य हिन्दी में किया जाता है। मयंक जैन, मॉयल लिमिटेड के अध्यक्ष, ने कहा कि कंपनी में शत प्रतिशत कार्य हिन्दी में किया जाता है। मयंक जैन, मॉयल लिमिटेड के अध्यक्ष, ने कहा कि कंपनी में शत प्रतिशत कार्य हिन्दी में किया जाता है।

मॉयल में शत प्रतिशत कार्य हिन्दी में किया जाता है- मयंक जैन

मॉयल लिमिटेड में शत प्रतिशत कार्य हिन्दी में किया जाता है। मयंक जैन, मॉयल लिमिटेड के अध्यक्ष, ने कहा कि कंपनी में शत प्रतिशत कार्य हिन्दी में किया जाता है। मयंक जैन, मॉयल लिमिटेड के अध्यक्ष, ने कहा कि कंपनी में शत प्रतिशत कार्य हिन्दी में किया जाता है।

मॉयल में पोरा का कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न

मॉयल लिमिटेड में पोरा का कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न। कार्यक्रम का उद्देश्य पोरा का कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न का आयोजन करना था। कार्यक्रम का आयोजन मॉयल लिमिटेड में पोरा का कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न का आयोजन करना था।

मॉयल भरवेली फेरी प्लांट को मिला प्रथम स्थान

मॉयल लिमिटेड भरवेली फेरी प्लांट को मिला प्रथम स्थान। कार्यक्रम का उद्देश्य मॉयल लिमिटेड भरवेली फेरी प्लांट को मिला प्रथम स्थान का आयोजन करना था। कार्यक्रम का आयोजन मॉयल लिमिटेड भरवेली फेरी प्लांट को मिला प्रथम स्थान का आयोजन करना था।





MOIL_LIMITED



MOILlimited



moil_limited



moillimited7858